20वां अंक, अर्द्ध वार्षिक, जनवरी - जून 2022

ओडिशा विशेषांक

सुरभि

आज़ादी का अमृत महोत्सव

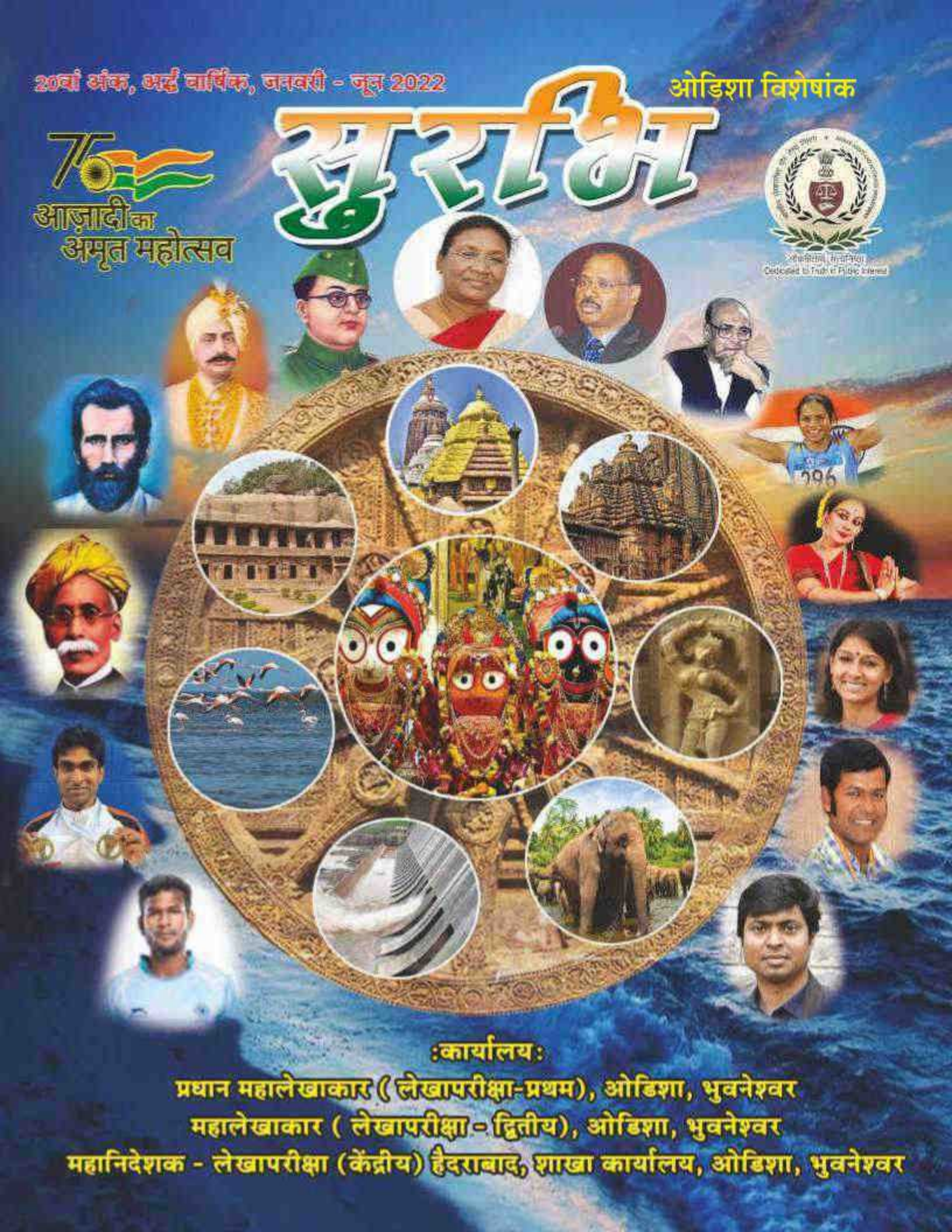

:कार्यालय:

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम), ओडिशा, भुवनेश्वर

महालेखाकार (लेखापरीक्षा - द्वितीय), ओडिशा, भुवनेश्वर

महानिदेशक - लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद, शाखा कार्यालय, ओडिशा, भुवनेश्वर

सुरभि परिवार

परामर्शदाता समिति
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - 1)
महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - 2)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
(लेखापरीक्षा - 2)
निदेशक
(केन्द्रीय राजस्व लेखापरीक्षा)
उप महालेखाकार (प्रशासन)
(लेखापरीक्षा - 1)
संपादक मंडल
प्रधान संपादक
सुश्री मनालिका बॉर्गोहाइन
उप महालेखाकार (प्रशासन)
सह संपादक
श्री अशोक कुमार पंडा
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती शुभस्मिता आचार्य
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री गिरराज शरण अग्रवाल
हिंदी अधिकारी
श्री शैलेन्द्र कुमार
हिंदी अधिकारी
श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक
श्रीमती मोनिका चौहान
कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री दीपिका चटर्जी
कनिष्ठ अनुवादक
श्री जितेन्द्र कुमार
डी.ई.ओ.

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है ।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
1.	भारत की राष्ट्रपति : ओडिशा की बेटी	श्री तपेश कुमार	1
2.	ओडिशा का इतिहास	श्री गिरराज शरण अग्रवाल	3
3.	ओडिशा : एक झलक	श्री भूदेव प्रकाश	4
4.	ओडिया भाषा का इतिहास	श्रीमती मोनिका चौहान	5
5.	ओडिशा की मुख्य जनजातियां	सुश्री दीपिका चटर्जी	6
6.	ओडिशा का गौरव - हीराकुंड बांध	श्री विनय सिंह	8
7.	ओडिशा के कुछ भ्रमण स्थान	श्री सत्यनारायण महान्ति	11
8.	मौनावलंबी गौरवमयी ओडिशा	श्री शैलेन्द्र कुमार	13
9.	पुरी : समुद्र व अद्वितीय अनुभव	श्रीमती रीता अग्रवाल	15
10.	श्री जगन्नाथपुरी धाम	सुश्री तितली पंडा	17
11.	रथ महोत्सव	श्री कालिप्रसाद मिश्रा	20
12.	रहस्यों एवं चमत्कारों से परिपूर्ण : श्री जगन्नाथ मंदिर	श्री राजेश कुमार झा	22
13.	महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी की मानवीय लीला	श्री गंगाधर पंडा	23
14.	नुआखाई उत्सव	श्री पुरुषोत्तम गिरि	25
15.	परोपकारी उत्कल मणि	श्रीमती कमला नायक	27
16.	शक्ति उपासना में प्रसिद्ध	श्रीमती रूपाली	28
17.	रेत - कला के भारतीय जादूगर- सुदर्शन पटनायक : ओडिशा की शान	श्री अशोक कुमार पंडा	29
18.	ओडिसी नृत्य	श्री सरोज बारिक	31
19.	कलिंग युद्ध: एक ऐसा भयानक युद्ध जिसके बाद सम्राट अशोक ने अपनाया था अहिंसा का मार्ग	श्रीमती स्वर्णा स्वरूपा पात्र	33
20.	पावन उत्कल	श्री सतीश कुमार	34
21.	मो बस	श्री तपेश कुमार	35

संदेश

श्री राज कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
ओडिशा, भुवनेश्वर

कार्यालयीन अर्धवार्षिक गृह पत्रिका 'सुरभि' का 20वाँ अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हमारे कार्यालय में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में 'सुरभि' पत्रिका का योगदान सराहनीय रहा है। इस पत्रिका ने राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों को रचनात्मक मंच प्रदान करने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका निभाई है। कार्यालय में हिंदी के प्रति सकारात्मक वातावरण निर्मित करने में भी 'सुरभि' पत्रिका ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस प्रकार की पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के विकास एवं संवर्धन हेतु अत्यधिक महत्व रखता है। यह भी हर्ष का विषय है कि राजभाषा यज्ञ में साधनारत रचनाकारों एवं सुधी पाठकों से भी आशानुकूल एवं अनवरत सहयोग प्राप्त हो रहा है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के निरंतर विकास एवं प्रचार-प्रसार करने की दिशा में बहुत योगदान प्रदान करती रहेगी। 'सुरभि' पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्यालय में हिंदी का प्रचार-प्रसार करना तो है ही इसके अतिरिक्त उन प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना भी है जो हिंदी भाषा में लेख एवं रचनाएँ लिखने में रूचि रखते हैं।

मैं 'सुरभि' के 20वें अंक को पठनीय एवं रोचक बनाने हेतु संपादक-मंडल के सदस्यों सहित सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ। मुझे आशा है कि आप सभी भविष्य में भी 'सुरभि' पत्रिका के प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान देते रहेंगे।

'सुरभि' की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

राज कुमार

(राज कुमार)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार(लेखापरीक्षा-2),
ओडिशा, भुवनेश्वर

कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुरभि' के 20वें अंक का प्रकाशन करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । 'सुरभि' पत्रिका कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गई है। हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संप्रेषक भी है। इस वर्ष पत्रिका का प्रकाशन 'ओडिशा विशेषांक' के रूप में किया जा रहा है। पत्रिका की रचनाओं में ओडिशा राज्य की कला / सभ्यता / संस्कृति / इतिहास की झलक मिलती है।

मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक पूर्व में प्रकाशित अंकों की भांति सफल सिद्ध होगा तथा राजभाषा हिंदी के विकास में सहायक होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2),
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री सुशांत रंजन
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2),
ओडिशा, भुवनेश्वर

मुझे इस बात का हर्ष है कि ओडिशा लेखापरीक्षा कार्यालयों की हिंदी पत्रिका 'सुरभि' का 20वां अंक पाठकों के लिए तैयार है। चूंकि यह अंक 'ओडिशा विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है, इसके माध्यम से ओडिशा की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा ओडिया भाषा की विशेषताओं को जानने का मौका विशेष रुप से पाठकों का मिलेगा। हिंदी भाषा में ओडिशा तथा ओडिया भाषा की विशेषताओं को प्रस्तुत करते हुए यह पत्रिका हमारे राष्ट्र की अनोखी अनेकता -में- एकता की संस्कृति का प्रतीक है। इससे हिंदी भाषा के साथ-साथ ओडिशा से संबधित विशेषताओं का भी प्रचार-प्रसार होगा, जो पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक होगा। भारत की अनेक भाषाओं की धरोहर का ध्यान रखते हुए, सभी भाषाओं के साथ-साथ हिंदी भाषा की प्रोन्नति का यह प्रयास सराहनीय है।

मेरी तरफ से 'सुरभि' पत्रिका के सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों को शुभकामनाएं ।

सुशांत रंजन
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2),
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री दुशासन बेहेरा
निदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद
शाखा कार्यालय, ओडिशा, भुवनेश्वर

'सुरभि' के 20वें अकं का प्रकाशन हमारे लिए खुशी की बात है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। एक भाषा के रूप में हिंदी न केवल भारत की पहचान है, बल्कि यह जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक एवं परिचायक भी है। हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है।

हिंदी बहुत ही सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ-साथ विश्व की संभवत: सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और लिखने-पढ़ने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं ।

'सुरभि' पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप सबके सतत सहयोग से यह पत्रिका और भी रोचक एवं समृद्ध बनेगी ।

हार्दिक शुभकामनाएं।

दुशासन बेहेरा
निदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद
शाखा कार्यालय, ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

सुश्री मनालिका बॉर्गोहाइन
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
ओडिशा, भुवनेश्वर

कार्यालय की अर्धवार्षिक गृह पत्रिका 'सुरभि' के 20वें अंक को पाठकों के करकमलों में अर्पित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका का प्रकाशन अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में हमारी राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा रूचि के सृजनात्मकता हेतु एक विनम्र प्रयास है। इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिंदी में रचनाओं, लेख व कविताओं को लिखने का सार्थक प्रयास किया है जो अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

राजभाषा का कार्यान्वयन हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है, इसलिए कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य को बढ़ावा देने के लिए सदैव प्रेरित किया जाता रहा है। हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हिंदी के प्रति प्रेम एवं निष्ठा को देखकर मैं यह कह सकती हूँ कि हमारा कार्यालय हिंदी के विकास एवं प्रचार - प्रसार हेतु सक्रिय रूप से पूर्णतया कटिबद्ध है। ओडिशा की संस्कृति, स्थापत्य एवं विरासत से संबंधित विषय-वस्तु पर आधारित पत्रिका 'सुरभि' का यह 20वाँ अंक उसी का प्रतिफल है।

वे सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण बधाई के पात्र हैं जिनके संयुक्त प्रयासों से 'सुरभि' पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है, साथ ही मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

हार्दिक शुभकामनाएं।

मनालिका

मनालिका बॉर्गोहाइन
उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं प्रधान संपादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
ओडिशा, भुवनेश्वर

सुरभि 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), भुवनेश्वर, ओड़िशा

अध्यक्ष कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य हेतु प्रशंसा पत्र

नराकास (का.) भुवनेश्वर के तत्वाधान में वर्ष 2021-22 के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु महालेखाकार (लेखापरीक्षा- 1) का कार्यालय, ओड़िशा, भुवनेश्वर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

एतदर्थ यह प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

स्थान: भुवनेश्वर
दिनांक: 27.01.2022

(दिनमणि मल्लिक)
भा.ले.प. एवं ले.वि.
सचिव-सह-वरिष्ठ उपमहालेखाकार

(वी.एम.वी.नवस किशोर)
भा.ले.प. एवं ले.वि.
अध्यक्ष-सह-महालेखाकार

Indian Audit And Accounts Department
Principal Accountant General (A & E), West Bengal

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL

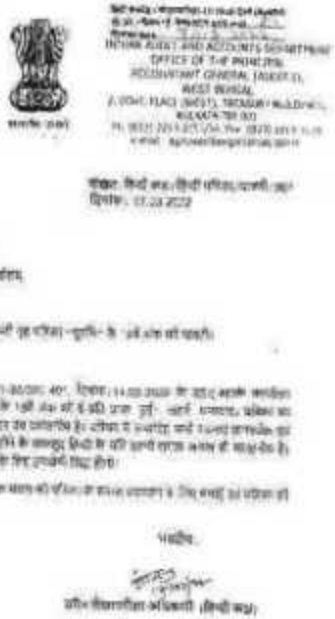

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 028

सेवा में,

[illegible]

भुवनेश्वर - 751001

विषय: हिंदी पत्रिका "सुरभि" के [illegible] अंक की प्राप्ति

महोदय/महोदया,

[illegible]

भवदीय

हिंदी अधिकारी

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु

सेवा में,

[illegible]

भुवनेश्वर

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'सुरभि' के [illegible] अंक की प्राप्ति सूचना -

महोदय/महोदया,

[illegible]

भवदीय,

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल
कोलकाता – 700 001

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर

विषय: आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'सुरभि' के [illegible] अंक की प्राप्ति

महोदय/महोदया,

[illegible]

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
पूर्वोत्तर सीमांत रेल, मालीगांव, गुवाहाटी

संख्या: 9/10-4/2010/82 (पत्रिका)
दिनांक: 18/03/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा/ओडिशा-1),
भुवनेश्वर ओडिशा- 751001

विषय: वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'सुरभि' के [illegible] अंक की प्राप्ति के संदर्भ में

महोदय/महोदया,

[illegible]

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(प्रशा.)

भारत की राष्ट्रपति : ओडिशा की बेटी

श्री तपेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2)

(ओडिशा के एक छोटे से आदिवासी गाँव, जहां प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करना भी एक सपने जैसा ही था, की बेटी ने अनेक बाधाओं के बावजूद अपने दृढसंकल्प से कॉलेज जाने वाली अपने गांव की पहली बेटी बनी और आज वह जनजातीय समाज की पहली महिला राष्ट्रपति है।)

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, ओडिशा के एक सुदूर आदिवासी गाँव के जनजातीय समुदाय में जन्मी बेटी, एक ऐसे में जब भारत देश अपनी आजादी का अमृत महोत्सव अर्थात् स्वतंत्रता के 75वां वर्ष मना रहा है, दिनांक 25 जुलाई 2022 (सोमवार) को भारत के 15वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लिया है । वह इस पद पर नियुक्त होने वाली दूसरी महिला एवं पहली आदिवासी महिला हैं । वह सभी भूतपूर्व राष्ट्रपतियों में से सबसे कम उम्र की एवं स्वतंत्रता के बाद जन्म लेनेवाली पहली राष्ट्रपति है । भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के साथ-साथ ओडिशा के लोगों के लिए भी बहुत गर्व की बात है कि एक आदिवासी महिला को देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद एवं भारत का राज्य प्रमुख के लिए चुना गया है ।

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु के बारे में

इनका जन्म 20 जून 1958 ई. को ओडिशा के मयूरभंज जिले के रायरंगपुर नगर के पास उपरबेड़ा गाँव में एक संथाली (आदिवासी) परिवार में हुआ था । इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपरबेड़ा के प्राथमिक विद्यालय से एवं उच्च शिक्षा भुवनेश्वर से पूरी की ।

इन्होंने वर्ष 1979 से 1983 तक राज्य सिंचाई और बिजली विभाग में एक कनिष्ठ सहायक के रूप में और फिर वर्ष 1997 तक रायरंगपुर में श्री अरबिंदो इंटीग्रल एजुकेशन सेंटर में एक शिक्षिका के रूप में कार्य किया । वर्ष 1997 में वह रायरंगपुर निगम के लिए चुनी गई और नागरिक निकाय की उपाध्यक्ष बनीं तथा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हुईं । वर्ष 2000 में इन्होंने अपना पहला ओडिशा विधानसभा चुनाव जीता । वह ओडिशा सरकार में 6 मार्च, 2000 से 6 अगस्त, 2002 तक वाणिज्य और परिवहन विभाग के लिए राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार के साथ) और 6 अगस्त, 2002 से 16 मई, 2004 तक मत्स्य पालन और पशु संसाधन विकास मंत्री रहीं । इन्हें पहली बार विधायक बनने के बाद स्वतंत्र प्रभार दिया गया था जोकि पहली बार बनीं विधायक के लिए एक दुर्लभ जिम्मेदारी थी । इन्हें वर्ष 2007 में ओडिशा सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ विधायक के लिए नीलकंठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ।

वर्ष 2015 में श्रीमती मुर्मु को झारखंड का राज्यपाल नियुक्त किया गया । श्री रघुबर दास के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम, 1908 और संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम, 1949 में संशोधन के लिए दो विधेयक लाया । ये संशोधन आदिवासी क्षेत्रों में कृषि से व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए भूमि उपयोग के रूपांतरण की अनुमति देने से संबंधित थे, जिसने जनजातीय समूहों और नागरिक समाज के बीच एक बड़ा हंगामा खड़ा कर दिया । श्रीमती मुर्मु ने जल्द ही हस्तक्षेप किया और जब दोनों विधेयकों को इनके सामने पेश किया गया तो इन्होंने दोनों विधेयकों को खारिज कर दिया ।

श्रीमती मुर्मु झारखंड के राज्यपाल के रूप में एक पूर्ण कार्यकाल पूरा करने वाली पहली राज्यपाल होने का रिकॉर्ड दर्ज किया है एवं इन्होंने वर्ष 2021 में राज्यपाल के रूप में एक अतिरिक्त वर्ष सेवा भी प्रदान की । जून 2022 में एनडीए के उम्मीदवार के रूप में उनके नाम की घोषणा राष्ट्रपति चुनाव के लिए की गई ।

राष्ट्रपति : संवैधानिक प्रावधान

भारतीय संविधान के अनुछेद 52 के प्रावधान में किया गया है कि भारत का एक राष्ट्रपति होगा । राष्ट्रपति भारत का राज्य प्रमुख होता

है । वह भारत का प्रथम नागरिक है और राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं सुदृढ़ता का प्रतीक है ।

अनुछेद 54 के प्रावधानों के अनुसार, राष्ट्रपति का निर्वाचन एक निर्वाचक मण्डल के सदस्यों द्वारा किया जाता है जिसमें निम्न लोग शामिल होते है: (क) संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य; और (ख) राज्यों के विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य (यहाँ राज्य में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी भी शामिल है ।) राष्ट्रपति का चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार एकल संक्रमणीय मत और गुप्त मतदान द्वारा होता है । किसी उम्मीदवार को राष्ट्रपति के चुनाव में निर्वाचित होने के लिए कुल वैध मतों के आधे से एक अधिक मत प्राप्त करने की आवश्यकता होती है ।

राष्ट्रपति की शक्तियों में कार्यकारी शक्ति, विधायी शक्ति, सैन्य शक्ति, आपातकालीन शक्ति एवं क्षमादान करने की शक्ति महत्वपूर्ण हैं । भारत सरकार के सभी शासन संबंधी कार्य उनके नाम पर किए जाते हैं । राष्ट्रपति भारतीय संसद का एक अभिन्न अंग है । अंतर्राष्ट्रीय संधियों व समझौते उनके नाम पर किए जाते हैं । वे भारत के सैन्य बलों के सर्वोच्च सेनापति होते है ।

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु राष्ट्रपति के रूप में

18 जुलाई, 2022 को हुए राष्ट्रपति चुनाव के लिए निर्वाचक मण्डल की सूची में कुल 4796 मतदाताओं में से 4754 मतदाताओं (99 से अधिक) ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया । श्रीमती द्रौपदी मुर्मु को 6,76,803 मूल्य के 2,824 मत मिले जबकि विपक्ष के उम्मीदवार श्री यशवंत सिन्हा को 3,80,177 मूल्य के 1,877 मत मिले अर्थात् श्रीमती मुर्मु को कुल वैध मतों का 64.03 प्रतिशत मत प्राप्त हुए।

श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने 25 जुलाई, 2022 को भारत के 15वें राष्ट्रपति के रूप में पद की शपथ लिया । इन्होंने शपथ के साथ-साथ राष्ट्रपति के रूप में पहला सम्बोधन भी हिंदी भाषा में किया । भारत के राष्ट्रपति पद का कार्यभार संभालने के अवसर पर उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि ''हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने आजाद हिन्दुस्तान के हम नागरिकों से जो अपेक्षाएं की थीं, उनकी पूर्ति के लिए इस अमृतकाल मे हमें तेज गति से काम करना है । इन 25 वर्षों में अमृतकाल की सिद्धि का रास्ता दो पटरियों पर आगे बढ़ेगा - सबका प्रयास और सबका कर्तव्य । भारत के उज्ज्वल भविष्य की नई विकास यात्रा, हमें सबके प्रयास से करनी है, कर्तव्य पथ पर चलते हुए करनी है । साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि ''राष्ट्रपति के पद तक पहुँचना मेरी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है ये भारत के प्रत्येक गरीब की उपलब्धि है । मेरा निर्वाचन इस बात का सबूत है कि भारत में गरीब सपने देख भी सकता है और उन्हें पूरा भी कर सकता है । मैं आज समस्त देशवासियों को, विशेषकर भारत के युवाओं को तथा भारत की महिलाओं को ये विश्वास दिलाती हूं कि इस पद पर कार्य करते हुए मेरे लिए उनके हित सर्वोपरि होंगे ।''

भारत के 15वें राष्ट्रपति के रूप में श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का चुनाव भारत की विकास यात्रा में एक नया मानदंड स्थापित करता है जिसमें न केवल महिला सशक्तिकरण बल्कि महिला नेतृत्व वाले विकास (not only women's empowerment but also women led development) की भी परिकल्पना की गई है । इनका चुनाव प्रतीकात्मकता में समृद्ध है । यह हमारे भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग (Indian Audit & Accounts Department) जो कि "लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा" (dedicated to truth in public interest), के साथ साथ महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए एक मिसाल है । श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा रायरंगपुर से रायसीना हिल्स तक की तय की गई दूरी, हम भारत के लोगों को हमारे लोकतन्त्र की शक्ति को प्रदर्शित करती है कि एक गरीब घर में पैदा हुई बेटी, दूर-सुदूर आदिवासी क्षेत्र की बेटी, भारत के सर्वोच्च संवैधानिक पद तक पहुंच सकती है ।

ओडिशा का इतिहास

श्री गिरराज शरण अग्रवाल
हिंदी अधिकारी

भारत के पूर्वी तट पर स्थित अति प्राचीन राज्य, जो अपनी कला, संस्कृति एवं स्थापत्य कला के लिए विश्वविख्यात है, जहाँ, महाप्रभु जगन्नाथ का वास है, जहाँ समुद्र देवता सदैव महाप्रभु जगन्नाथ के चरण वंदन करने के लिए आतुर रहते है, जहाँ आदि देव महादेव लिंगराज विराजमान हों, जहाँ विश्वप्रसिद्ध कोणार्क मंदिर है, जहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य कण में विद्यमान है, जहाँ संध्या के आगमन के साथ ही पवनदेवता भी आपके मन मस्तिष्क को उर्जा, उमंग एवं उत्साह से भर देते हैं, जी हाँ आप सही समझे हैं ओडिशा की ही बात हो रही है जिसे कलिंग उत्कल, कोनगदा एवं आर्द्र देश के नाम भी जाता है ।

आइये ऐसे ओडिशा के इतिहास को जानने का प्रयास करते है।

ओडिशा की प्राचीनता का अनुमान हम इस तथ्य से लगा सकते है कि इसका उल्लेख महाभारत एवं पुराणों में भी मिलता है । महाभारत में कलिंग का कई बार उल्लेख हुआ है । उल्लेखनुसार कलिंग के राजा वरुण एवं नदी पसारा का एक श्रुतयुद्ध पुत्र था जो महाभारत में कौरवों की तरफ से लड़ा था । उसके पिता द्वारा उसे एक गदा दी गयी थी । श्रुतयुद्ध को वरदान था कि जब तक गदा उसके पास रहेगी वह उसकी रक्षा करेगी । किंतु युद्ध उन्माद में श्रुतयुद्ध ने उस से गदा से निहत्थे श्रीकृष्ण पर प्रहार कर दिया । प्रयोग की शर्त का उल्लंघन होने पर गदा ने श्रीकृष्ण के स्थान पर श्रुतयुद्ध का भी वध कर दिया ।

मौर्य वंश के अशोक महान के कलिंग आने से पूर्व भी मगध शासक महापदम नंद के कलिंग के कुछ क्षेत्रों मे शासन के प्रमाण मिलते हैं। सम्राट अशोक द्वारा सन् 261 ईसा पूर्व में कलिंग युद्ध जीतने के बारे में हम सभी ने इतिहास में पढ़ा ही है जिसमें 10 लाख से अधिक सैनिक मारे गये थे । इस नरसंहार को देखकर अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया और उन्होंने बौद्ध धर्म को अपना लिया। ऐसा माना जाता है कि भुवनेश्वर से 8 किलोमीटर दूर स्थित धौली ही वह स्थान है जहाँ पर कलिंग युद्ध हुआ था । वर्तमान में वहाँ शांति स्तूप है जिसका निर्माण जापानी बौद्ध संघ एवं कलिंग बौद्ध निपोन बौद्ध संघ द्वारा किया गया है ।

मौर्य वंश के पश्चात् कलिंग में 1 शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में महामेधवाहन वंश के शासक खारबेल ने शासन किया । भुवनेश्वर स्थित उदयगिरि गुफाओं में हाथीगुम्फा उत्कीर्ण लेखों से खारवेल के संबंध में जानकारी प्राप्त होती है । खारवेल का सबसे महत्वपूर्ण योगदान कलिंगाजैन की मूर्ति को मगधों से वापस लाना था। खारवेलों के दौरान जैन धर्म खूब फलाफूला । खारवेलों ने जैन साधुओं के लिए उदयगिरि एवं खंडगिरि में कई गुफाएं भी बनवायीं।

इसके अतिरिक्त ओडिशा पर इतिहास के भिन्न समय पर अनेक वंशों ने राज किया जिनमे मुख्य हैं कुषाण, सातवाहन, समुद्रगुप्त, शैलोदभावा, भौमाकारा,सोमवांशी।

अदंतवर्मन ने पुरी जगन्नाथ मंदिर बनवाने का कार्य आरम्भ किया । इसके पश्चात् उनके उत्तराधिकारी अनंग भिमादेव ने मंदिर निर्माण पूर्ण करवाया । कोणार्क स्थित सूर्य मंदिर के निर्माण का श्रेय राजा नरसिंहदेव को जाता है ।

इसके पश्चात गजपति, भोईवंश, मुकंद देव ने भी ओडिशा के विभिन्न भागों पर राज किया । तत्पश्चात 16 वीं शताब्दी में बंगाल के राजाओं एवं मराठों ने समय-समय पर ओडिशा पर शासन किया।

17 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी तक पुर्तगालियों एवं अंग्रेजों ने ओडिशा के अलग-अलग हिस्सों पर आधिपत्य स्थापित कर शासन किया ।

20 वीं शताब्दी के आरम्भ में सन् 1911 में ओडिशा एवं बिहार को बंगाल प्रांत से अलग कर दिया गया । 1 अप्रैल 1936 को ओडिशा को पृथक प्रांत का दर्जा प्रदान कर दिया गया । तभी से प्रत्येक वर्ष 1 अप्रैल उत्कल दिवस/ओडिशा दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् श्री हरिकृष्ण मेहताब ओडिशा के प्रथम मुख्यमंत्री बने । वर्तमान में बीजू जनता दल के श्री नवीन पटनायक पिछले 22 वर्षों से ओडिशा के ओडिश के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यरत हैं ।

ओडिशा (एक झलक)

श्री भूदेव प्रकाश
वरि. लेखापरीक्षक
कार्यालय : के.रा.लेप.

आज हम बात केवल किसी राज्य या प्रदेश की नहीं, बल्कि उस इतिहास के बारे में और उस इतिहास से वर्तमान तक के उस बदलाव के बारे मे करेंगे, जिसने ना केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक अच्छा भूमिका अदा की है । जहाँ के इतिहास की नींव सदियों पहले रखी गयी थी और जहाँ का इतिहास ही नहीं वर्तमान, पहनावा, खेलकूद और नृत्य-शैली से पूरे विश्व का ध्यान अपनी और आकर्षित करता है ।

जी हाँ, हम बात कर रहे है, भारत के पूर्वीतट पर स्थित राज्य ओडिशा की, जिसका इतिहस सदियों से इतिहासकारों के लिए चर्चा का विषय रहा है । यह राज्य अपनी वास्तुकला, मंदिरों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है । धार्मिक स्थलों में यहाँ जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर व लिंगराज मंदिर विश्व प्रसिद्ध हैं ।

ओडिशा राज्य के पुरी में समुद्र किनारे स्थित जगन्नाथ मंदिर भगवान जगन्नाथ (श्रीकृष्ण) को अर्पित है । जो सदियों से वास्तुकारों की बेहतर प्रदर्शनी का एक अनोखा नमूना रहा है । जिसे भारत में स्थित चार पवित्र धामों में से एक मुख्य धाम भी माना जाता है । यहाँ पर भगवान जगन्नाथ के निकाले जाने वाली रथयात्रा यहाँ पर भगवान जगन्नाथ जी की निकाले जाने वाली रथयात्रा की शोभायात्रा अवर्णनीय है । जिसमें सम्पूर्ण भारत के भिन्न-भिन्न राज्यों के तीर्थयात्री व अन्य देशों के लोग भी शामिल होते हैं और यह रथयात्रा भारत के साथ-साथ कई अन्य देशों में भी बड़ी धूम-धाम से निकाली जाती है ।

ओडिशा के पुरी जिले मे स्थित कोणार्क का सूर्यमंदिर सूर्य देवता को अर्पित है । आज से लगभग 1000 वर्ष पुराने इस मंदिर के पत्थरों पर तराशी की कलाकृति आज भी शोभनीय है । इस मंदिर का अंधिकांश भाग ढहने के बावजूद भी यह भारी संख्या में पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है । ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर है, जिसे भारत की प्रथम स्मार्ट सिटी का दर्जा प्राप्त है । ऐतिहासिक मंदिरों की विशाल संख्या और मूल्यवान विरासत संसाधनों के कारण इस शहर को 'मंदिरो के शहर' के नाम से भी जाना जाता है । यहीं स्थित लिंगराज मंदिर, खंडगिरि और उदयगिरि की गुफायें काफी प्रसिद्ध है । जिन्हें देखने के लिए बहुत बड़ी संख्या मे पर्यटक यहाँ आते हैं ।

भुवनेश्वर में धौलिगिरि शान्तिस्तूप स्थित है जो भगवान बौद्ध को समर्पित है । ऐसा माना जाता है, कि दयानदी की लड़ाई में सैनिकों के रक्तस्राव से इस नदी रंग लाल हो गया था, जिसे देखकर सम्राट अशोक का हृदय द्रवित हो गया और उसने बौद्धधर्म अपना लिया तथा जीवन भर अहिंसा का संदेश दिया व बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार किया ।

चारों ओर हरियाली से हरा-भरा शब्द खेलकूद की दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है ।

ओडिशा में स्थित चिल्का झील भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है इसे भारत का सबसे बडा लैगुन भी माना जाता है । यह प्रवासी जलपक्षियों के लिए शीतकालीन मैदान है तथा इस झील मे लुप्तप्राय झोल्लिन पाये जाने के कारण यह पर्यटकों के लिए आकर्षक का केंद्र है।

यह राज्य न केवल इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा बल्कि वर्तमान में भी अपनी प्रशासनिक और राजनैतिक दृष्टि से विशेष है । यहाँ की सरकार द्वारा खेलकूद के लिए में जाने वाले योगदान से राज्य राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर स्थान रखता है ।

समुद्र किनरे स्थित होने के कारण इस राज्य को हमेशा प्राकृतिक आपदाओं जैसे - तूफान, बाढ़आदि का सामना करना पड़ता है । इस सभी आपदाओं से निपटने के लिए यहाँ की सरकार द्वारा स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण दिया जाता है । और सरकार द्वारा उठाये गये कदम और आपदा प्रबंधन मॉडल राष्ट्रीय स्तर पर आपदा प्रबंधन के लिए काफी प्रशंसनीय साबित हुआ है ।

अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक इमारतें और विशेष कलाकृति से यह राज्य हमेशा से भारत के महत्वपूर्ण राज्यों में अपना स्थान रखता है ।

ओडिया भाषा का इतिहास

श्रीमती मोनिका चौहान
कनि. अनुवादक

जैसा कि हम सभी जानते है कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है और भाषा समाज का आईना भी होती है। भाषा किसी भी समाज विशेष की धरोहर होती है। भाषा समाज से ही अपना आधार प्राप्त करती है, इसलिए जिस समाज की जैसी संस्कृति होती है, जैसे तीज-त्यौहार होते हैं उस समाज की भाषा संरचना भी वैसी ही होती है। प्रत्येक भाषा के अपने अलंकार, मुहावरें व लोकोक्तियां होती है।

ओडिशा राज्य की मुख्य भाषा ओडिया है। ओडिया भाषा की लिपि ओडिया ही है। इस लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। इस लिपि के वर्णों का रूप देखकर ऐसा लगता है कि इस पर तमिल, मलयालम जैसी दक्षिण भारतीय भाषाओं की लिपियों का प्रभाव है किंतु ऐसा नहीं है। ओडिया लिपि देवनागरी और बांग्ला लिपि से सबसे ज्यादा मिलती जुलती है। देवनागरी लिपि और ओडिया में केवल इतना ही अंतर है कि देवनागरी लिपि में ऊपर एक सीधी रेखा होती है जो ओडिया लिपि में वर्तुल हो जाती है और लिपि के मुख्य अंश की अपेक्षा अधिक जगह घेर लेती है। भाषा विद्वानों का ऐसा मानना है कि ओडिशा में पहले ताम्र पत्र पर लोहे की लेखनी से लिखने का प्रचलन था और सीधी रेखा खींचने पर ताम्रपत्र के फट जाने का डर था। अत: सीधी रेखा के बदले वर्तुल रेखा का प्रयोग किया जाने लगा।

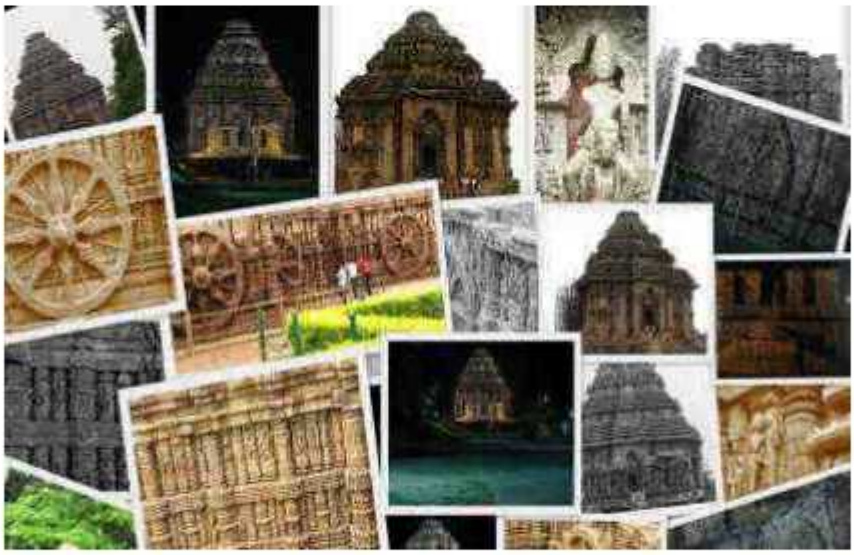

ओडिया भाषा में संस्कृत शब्दों की अधिकता है। संस्कृत के गृहीत शब्दों से ही ओडिया की शब्दावली समृद्ध हुई है। ओडिया भाषा का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। इसके इतिहास को मुख्यत: 5 वर्गों में बाँटा जा सकता है।

1. प्राचीन 2. प्रारम्भिक 3. मध्य 4. नूतन 5. आधुनिक
. आधुनिक

अन्य उत्तर भारतीय भाषाओं के मुकाबले ओडिया पर पारसी भाषा का प्रभाव सबसे कम पड़ा। यही कारण है कि ओडिया संस्कृत निष्ठ भाषा है। लिखित ओडिया भाषा का प्राचीनतम उदाहरण मादला पांजि (पुरी के जगन्नाथ मंदिर की पंजिका) में मिलता है। मादला पांजि को ताड़ के पत्तों (ताम्रपत्रों) पर लिखा गया था।

ओडिया भाषा की कुछ प्रमुख बोलियां भी है जैसे - मिदनापुरी ओडिया, सिंहभूम ओड़िया, बालेश्वरी ओडिया, गंजामी, कालहाण्डी, देशीय, संबलपुरी और भात्री।

ओडिया भाषा में छः शुद्ध स्वर, नौ संयुक्त स्वर, 28 व्यंजन और 4 उपस्वर है। इस भाषा में शब्दों का अंत व्यंजनों से नहीं होता है।

ओडिया भारत की पुरानी भाषाओं में से एक है। इसे भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त है। ओडिया की उत्पत्ति 10 वीं शताब्दी में हुई थी। 16वीं और 17वीं शताब्दी में अन्य भारतीय भाषाओं की तरह ओडिया को भी संस्कृत के प्रभाव के कारण बदलावों का सामना करना पड़ा। यह भाषा भी विरासत से साहित्यिक सम्पन्नता लिए हुए आधुनिक दौर में प्रविष्ट हुई है। आधुनिक युग की ओडिया का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी से शुरू हुआ।

19वीं शताब्दी के मध्य से ओडिया साहित्य के आधुनिक युग का प्रारम्भ हुआ। मुगलकाल और मरहट्टा काल की समाप्ति के बाद जब ओडिशा में अंग्रेजी शासन आया तो इसका प्रभाव ओडिया भाषा और उसके साहित्य पर भी पड़ा। इस काल के एक प्रमुख कवि थे राधानाथ राय, जो एक स्कूल इंस्पेक्टर थे, और उनपर अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव देखा जा सकता है। इस काल में गद्य और अनुवाद लेखन भी काफी हुए। इसी राधानाथ युग में एक विवाद खड़ा हो गया कि ओडिया एक स्वतंत्र भाषा है या नहीं। बंगाल के विद्वान राजेन्द्रलाल मित्र आदि आन्दोलन चला रहे थे कि ओडिया एक स्वतंत्र भाषा नहीं है। इसके विरोध में फकीर मोहन सेनापति आदि ने आन्दोलन चलाया और कहा कि यह एक स्वतंत्र भाषा है। फकीरमोहन ने उत्कृष्ट गद्य उपन्यास लिखकर उसकी भाषा और शैली को प्रतिष्ठित किया। उन्होंने पद्य भी रचे और रामायण तथा महाभारत का ओडिया में पद्यानुवाद भी किया।

ओडिशा की मुख्य जनजातियां

सुश्री दीपिका चटर्जी
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2)

भारत के पूर्वी तट पर स्थित ओडिशा राज्य ना केवल अपने दर्शनीय मनोरम पर्यटन स्थलों के लिए जाना जाता है बल्कि अपनी भूमि को 62 जनजातियों के साथ साझा करने के लिए भी जाना जाता है । भारत की जनजातियां भले ही अल्पसंख्यक समुदाय है जो देश की कुल आबादी का 9 प्रतिशत के करीब है परंतु भाषा संस्कृति और विविधता के हिसाव से उनका फैलाव विशाल है । देश में कराब 80 प्रतिशत नौ राज्यों - महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, ओडिशा और आंध्रप्रदेश में बसे हैं । करीब 12 प्रतिशत उत्तर पूर्वी राज्यों में, 5 प्रतिशत दक्षिण और 3 प्रतिशत उत्तरी इलाकों में रहते हैं ।

घने जंगल, पहाड़ी स्थलाकृति ओडिशा के जनजाति आबादी के लिए काफी मददगार है । सदियों से अपरिवर्तित तथा आधुनिक सभ्यता से दूर प्राचीन आदिवासी बस्तियां पहाड़ियों पर या जंगल के पास बहने वाली नदियों के समीप विकसित हुई । ज्यादातर जनजाति

समुदाय कृषि, शिकार, शिल्प कौशल तथा धातु शिल्प से अपनी आजीविका चलाते है । गरीबी और अस्तित्व के संघर्ष के बावजूद वे अपनी विरासत के प्रति प्यार और श्रद्धा बनाए रखते हैं । इन जनजातियों में ज्यादातर मयूरभंज, केंदुझर, जाजपुर, बालासोर, भद्रक, ढेंकानाल, सुंदरगढ़, कंधमाल और अन्य आसपास के जिलों में फैले हैं ।

ओडिशा की मुख्य जनजातियां

कोंध - ओडिशा की सबसे बड़ी जनजाति में से एक है जो पहाड़ो, प्रकृति और नदियों की पूजा करती है । कोंध जनजाति के लागों को पहाड़ों पर, जंगल और पौधों का एक आवश्यक ज्ञान है । राज्यों के सबसे बड़े आदिवासी समुदायों में से एक कोंध को दुर्लभ औषधीय जड़ी बूटियों सहित जंगल, पहाड़ों, पेडों और पौधों का आंतरिक विशेष ज्ञान है । कोंध 'कुई' नामक भाषा बोलते हैं । 'कुई' एक द्रविड भाषा है जो 'ओडिया' लिपि में लिखी जाती है । कोंध समुदाय के लोग अपने विशिष्ट आभूषण, चेहरे के टैटू, कई झुमके और नाक के झल्ले के अलावा गर्दन पर चांदी के बैंड के लिए जाने जाते हैं यह समुदाय फुलवानी, बलांगीर, कोरापुट और गंजाम जिले के आसपास फैली हैं ।

गोंड - गोंड कोरापुट, बोलांगीर, सुंदरगढ़, संबलपुर की पहाडियों में रहने वाली एक योद्धा जनजाति है । गोंड सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि पूरे दक्षिण एशिया की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक है । ऐसा माना जाता है कि गोंडवाना या गौडो की भूमि मूल रूप से भूगर्भवेताओं द्वारा दी गई 'गोडवाना प्रदेश' थी जिसमें ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका, अंटार्कटिका, दक्षिण अफ्रीका और भारतीय उपमहाद्वीप शामिल थे ।

अरांव - अरांव सबसे प्रगतिशील और विकसित जनजातियों में से एक है । यह जनजाति अन्य जनजातियों की तुलना में आर्थिक रूप से अधिक समृद्ध है । यह जनजातियां अपने समृद्ध और तथा विभिन्न लोक गीत, लोक नृत्य तथा विभिन्न पारंपरिक संगीत वाद्य यंत्रो के प्रयोग के लिए जाने जाते हैं ।

बौंडा - बौंडा जनजाति पश्चिम ओडिशा के मलकानगिरी जिले के अलग-अलग पहाडी क्षत्रों में रहते है । यह जनजाति भारत के आदिम जनजातियों में से एक है उनके अलगाव और ज्ञात आक्रामकता के कारण भी अपनी संस्कृति को संरक्षित करना जारी रखते हैं बोंडा जनजाति के लोगों की वेशभूषा अनूठी है । वे सामान्यत एक अधोवस्त्र और गली में चांदी का हार पहनते हैं । यह लोग कृषि प्रधान है ।

सौरा - सौरा देश की सबसे पुरानी जनजातियों में से एक हैं । सौरा जनजातियों का उल्लेख हिंदू पुराणों तथा मिथकों में मिलता है । ओडिशा के गंजाम और गजपति और कोरापुट जिले पर रहते हैं । सौरा जनजाति के लोगों को कला का विशेष ज्ञान प्राप्त होता है और वे उनके घरों और मंदिरों को अविश्वसनीय दीवार भित्ति चित्रों से सजाते हैं जो दैनिक दृश्यों और सामाजिक और धार्मिक घटनाओं को दर्शाते हैं । उनकी कला ओडिशा का प्रतीक हैं ।

संथाल - संथाल जनजाति ना केवल ओडिशा बल्कि पश्चिम बंगाल, झारखंड तथा असम में पाए जाते हैं और ओडिशा में यह मयूरभंज, बालासोर, केंदुझर पर मूल रूप से रहते हैं । उनकी प्रमुख व्यवसाय शिकार, मत्स्य पालन, कृषि है । उन्हें वाद्य यंत्रों का विशेष ज्ञान है ।

ओडिशा का गौरव - हीराकुंड बांध

श्री विनय सिंह
पति-श्रीमती मोनिका चौहान, कनि. अनुवादक

हीराकुंड बांध जिसे हम ओडिशा का गौरव भी कह सकते है, विश्व का सबसे बड़ा और लंबा बांध है। इंजीनियरिंग प्रतिभा का उत्तम उदाहरण है। यह मिट्टी, कंक्रीट और चिनाई की एक संयुक्त संरचना है। इस बांध का निर्माण 1957 में महानदी पर किया गया था। यह ओडिशा के सबंलपुर जिले से 15 किमी दूर स्थित है। मुख्य हीराकुंड बांध की कुल लंबाई 4.8 किमी (3.0) मील) है, जो बाईं ओर लाम डूंगरी पहाड़ियों और दाईं ओर चंदिली डूंगरी पहाड़ियों में फैला है। इसमें 810 करोड़ धन मीटर जल संचित होता है। 1,33,090 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र के साथ, डैम श्रीलंका के क्षेत्रफल के दोगुने से अधिक है।

इसका मुख्य उद्देश्य बाढ़नियंत्रण एवं विद्युत उत्पादन करना है।

यह परियोजना भारत में शुरू की गयी कुछ आरम्भिक परियोजनाओं में से एक है। महानदी का जलस्तर बढ़ने पर विनाशकारी बाढ़की चुनौतियों से निपटने के लिए बांध का निर्माण प्रस्तावित किया गया था। 1945 में एक विस्तृत जांच रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। उन्हीं के नेतृत्व में, भविष्य लाभों को ध्यान में रखते हुए बहुउद्देशीय महानदी बांध के निर्माण में निवेश के प्रयास शुरू किए गए। इस परियोजना को केन्द्रीय जलमार्ग, सिंचाई और नेविगेशन आयोग द्वारा लिया गया था। 15 मार्च 1946 को ओडिशा के गवर्नर सर हॉथोर्न लेविस ने हीराकुंड बांध की आधारशिला रखी और पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा 12 अप्रैल 1948 को कंक्रीट का पहला बैच बिछवाया गया। हीराकुंड बांध का निर्माण 1948 में शुरू हुआ और पूर्ण रूप से 1953 में बनकर तैयार हुआ किंतु यह 1957 में पूरी तरह से कार्यरत हुआ था।

इसके दोनों तरफ दो अवलोकन मीनारें हैं, गाँधी मीनार व नेहरू मीनार। दोनों अवलोकन मीनारों से एक पहाड़ी के ऊपर स्थित एक प्रहरी दुर्ग है, जहाँ से हीराकुंड बांध के विहंगम दृश्य का आनन्द लिया जा सकता है। कल-कल कर बहती महानदी का साफ पानी देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह क्षितिज से पार फैला है, और यह आकाश एवं नदी के बीच की रेखाओं को धुंधला कर रहा हो। यहाँ

हमेशा सुंदर पक्षी आते हैं इसलिए, हीराकुंड बांध, पर्यटकों के लिए एक उत्तम और आदर्श स्थान है। आप बांध के नीचे स्थित सुंदर जवाहर उद्यान की सैर भी कर सकते हैं। जल संसाधन विभाग पार्क और मीनारों दोनों का रखरखाव करता है। महानदी नदी के ऊपरी जल निकासी बेसिन को दो विपरीत घटनाओं के लिए जाना जाता है। एक ओर अत्यधिक सूखा पड़ता है और दूसरी ओर निचले डेल्टा क्षेत्र में बाढ़से फसलों को व्यापक नुकसान होता है। जल निकासी प्रणाली के माध्यम से नदी के बहाव को नियंत्रित करके इन चुनौतियों को कम करने के उद्देश्य से इस बांध का निर्माण किया गया था।

हीराकुंड बांध की वास्तुकला बहुत ही बेहतरीन है। इसे आपको जरूर देखनी चाहिए। इसके जलाशय की तट रेखा 639 किमी० लम्बी है। गौरतलब है कि इस बाँध को बनाने में जितनी मिट्टी, कंक्रीट और अन्य सामग्री इस्तेमाल हुई है उससे कश्मीर से कन्याकुमारी तथा अमृतसर से डिब्रूगढ़तक करीब आठ मीटर चौड़ी सड़क बनाई जा सकती थी। हीराकुंड बाँध के पीछे विशाल झील है जो एशिया की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील है। हीराकुंड परियोजना पर हीराकुंड के अलावा दो और बांध हैं - टिक्करपाड़ा और नाराज बांध।

1 - टिक्करपाड़ा बांध 2- नाराज बांध

विकास और प्रगति की लागत अक्सर पर्याप्त होती है। हीराकुंड के मामले में, 1957 में बांध का काम पूरा होने के बाद पाया गया कि पानी रोकने से उसमें डूबे कई मंदिरों का पूर्णत: विनाश हो गया। यदि आप गर्मियों में यात्रा करते हैं, तो बांध का पानी इन खोए हुए मंदिरों के अवशेषों की संरचनाओं को प्रकट करेगा। इन मंदिरों की भूली-बिसरी कहानियों ने इतिहासकारों का ध्यान खींचा है। इन मंदिरों के ऐतिहासिक महत्व के बारे में जानकारी जुटाने के प्रयास शुरू किए गए है। कई मंदिर ऐसे है जो इतने वर्षों से पानी में डूबे रहने के कारण नष्ट हो गए हैं, लगभग 50 मंदिर ऐसे है जो पानी और समय की कसौटी पर खड़े हैं। उनकी संरचनाएँ हमें खोई हुई कहानियाँ और समय की याद दिलाती हैं।

बांध के निर्माण में लगभग 200 से अधिक मंदिर खो गए थे। हीराकुंड बांध का पानी पुरातत्व में रूचि रखने वालों और स्कूबा डाइविंग के शौकीनों को बेहतरीन अवसर प्रदान करता है कि वे भूले हुए इतिहास के अवशेषों का पता लगा सकें। आगंतुकों को मई और जून के महीनों के दौरान नौका विहार करते समय छिपे हुए मंदिर दिखाई देते हैं।

हीराकुंड बांध के पास बहुत से ऐसे मंदिर है जिनकी आज भी बहुत मान्यता है। उनमें से एक पद्मासिनी मंदिर के रूप में जाना जाता है। पद्मासिनी मंदिर एक समय में एक महत्वपूर्ण पूजा स्थल था जो अब जलमग्न गांव मद्मपुर में है। जलाशय क्षेत्र के अंदर स्थित सभी मंदिर कभी पद्मपुर का हिस्सा थे। घंटेश्वरी मंदिर संबलपुर में सबसे अधिक पूजनीय स्थलों में से एक है। मंदिर के आसपास की घंटियों से मंदिर को अपना नाम मिला। इस मंदिर का मुख्य आकर्षण शक्तिशाली महानदी नदी के साथ विभिन्न धाराओं के अभिसरण का स्थान है। पानी को बहुत पहले भँवर बनाने के लिए जाना जाता था। हीराकुंड बांध के निर्माण से अब यह मंदिर पानी से चारों ओर से ज्यादा सुरक्षित हो गया है। बुधराज मंदिर इस क्षेत्र का एक पुराना शिव मंदिर है और इसी क्षेत्र में एक श्रद्धालु

तीर्थस्थल है। मंदिर में बुधराजा की एक मूर्ति है, जो भगवान शिव का एक रूप है। मंदिर बुधराजा के शीर्ष पर स्थित है और 108 सीढ़ियों की लंबी चढ़ाई के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। महाशिवरात्रि और दशहरा के मौके पर मंदिर तब जीवंत हो जाता है, जब श्रद्धालु पीठासीन देवता को श्रद्धांजलि देते हैं। इसके अलावा और भी बहुत से मंदिर है जैसे - समलेश्वरी मंदिर, हुमा मंदिर आदि।

पर्यटक हुमा मंदिर में 'कुडा' नामक विशेष प्रकार की मछलियों का अवलोकन करने के लिए भी आते हैं। मछली मनुष्यों के आसपास कथित रूप से बहुत सहज है। वे मंदिर के करीब स्नान करने वाले लोगों के हाथों से सीधे मिठाई खाने के लिए जानी जाती हैं। मछलियों को भगवान की संपत्ति माना जाता है। वे मंदिर के आसपास के क्षेत्र में शांति से तैरती हैं क्योंकि कोई भी उन्हें पकड़ने का प्रयास नहीं करेगा। उन्हें विशेष नाम से बुलाया जाता है। शुभ दिनों पर उन्हें मंदिर के प्रसाद की पेशकश की जाती है। शिवरात्रि और अन्य अवसरों के दौरान हजारों तीर्थयात्री यहाँ की यात्रा करते हैं।

संबलपुर में हीराकुंड बांध की यात्रा का सबसे अच्छा समय सितंबर से मार्च तक है क्योंकि इस दौरान मौसम ज्यादातर सुहावना रहता है।

संबलपुर तक कैसे पहुंचे

हवाई मार्ग से: निकटतम हवाई अड्डा - स्वामी विवेकानंद अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, रायपुर (265 किलोमीटर), और बीजू पटनायक अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा, भुवनेश्वर (300 किलोमीटर) हैं।

रेल द्वारा : संबलपुर पूरे भारत के प्रमुख शहरों के लिए सीधी ट्रेनों द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। संबलपुर में चार रेलवे स्टेशन हैं, संबलपुर (खेतराजपुर), संबलपुर रोड (फाटक), हीराकुंड और संबलपुर सिटी।

सड़क द्वारा : संबलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 6 से जुड़ा हुआ है। मुंबई से कोलकाता तक का यह राजमार्ग संबलपुर से होकर गुजरता है। संबलपुर राष्ट्रीय एन.एच.-42 के माध्यम से भुवनेश्वर से जुड़ा हुआ है।

संबलपुर में दो बस स्टैंड हैं - एक निजी वाहनों के लिए और दूसरा सरकारी परिवहन के लिए। सरकारी बस स्टैंड लक्ष्मी टॉकीज छक में स्थित है और निजी बस स्टैंड ऐंथापाली में स्थित है, जो सरकारी बस स्टैंड से लगभग 3 किमी दूर है। हीराकुंड बांध और अन्य दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए टैक्सी,रिक्शा आसानी से उपलब्ध हैं।

ओडिशा के कुछ भ्रमण स्थान

श्री सत्यनारायण महान्ति
लेखापरीक्षक

1. भुवनेश्वर

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर राज्य के सबसे पसांदीदा दर्शनीय स्थान में से एक है । लगभग 3000 साल पुराने इतिहास वर्णित शहर भुवनेश्वर में एक समय पर 2000 से भी ज्यादा मंदिर थे । भुवनेश्वर को मंदिर मलिती शहर बोला जाता है । यहां के मंदिर, इतिहास, कलाकृति भारत मे अद्‌वितीय है । लिंगराज मंदिर भुवनेश्वर में स्थित सबसे पुराने मंदिरों में से एक है, जहां भक्त भगवान शिव की हरिहर के रूप में पूजा करते हैं, जो शिव और विष्णु का एक संयुक्त रूप है । शहर में स्थित राज्यराणि मंदिर, मुक्तेश्वर मंदिर, अनंत वासुदेव मंदिर, चौसठ योगिनी मंदिर आदि पर पत्थरों पर उकेरी गई डिजाइनों को देख कर मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रह सकते हैं । उदयगिरी, खंडगिरी, धौली शांति स्तूप पर लिखी भुवनेश्वर एक समय बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। शहर का उपकण्ठ पर नंदन कान्न के प्राणि उद्यान एवं वनस्पति उद्‌यान शहर की खूबसूरती को चार चांद लगा देता है।

घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च ।

2. पुरी

ओडिशा की राजधानी से मात्र 60 किलोमीटर दूर स्थित शहर पुरी भारत की आस्था के चार धामों में से एक धाम तथा विश्व का एक प्रमुख दर्शनीय स्थल है । पुरी का श्री जगन्नाथ मंदिर अपनी कला, प्रसाद एवं रथयात्रा हेतु सर्वत्र जाना जाता है । पुरी के समुद्र तट, सुबह के सूर्योदय एवं समुद्र में मोटर बोट सबका मनोरंजन का केंद्र है ।

घूमने का सबसे अच्छा समय-जुलाई से मार्च ।

3. कोणार्क

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से मात्र 65 किलोमीटर दूरी पर स्थित शहर कोणार्क समुद्र तट पर अवस्थित है । एक जमाने में विश्व के सप्ताश्चर्य के रूप पहचाने जाने वाला कोणार्क का सूर्य मंदिर अपनी खुदाई एवं मूर्तिकला हेतु जाना जाता है । यहाँ पर अवस्थित चंद्रभागा तट एवं यहाँ का कोणार्क महोत्सव सबके मनोरंजन का केंद्र है ।

घूमने का सबसे अच्छा समय - सितम्बर से मार्च ।

4. चिल्का झील

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से मात्र 72 किलोमीटर दूरी पर स्थित चिल्का झील विश्व की सबसे बड़ी खाराजल झील तथा सबसे बड़ी खाड़ी है । नौ-विहार, झील की मध्य में स्थित कालिजाई पहाड़ तथा जल प्राणी व पक्षी यहां के मुख्य आकर्षण है । प्रतिवर्ष ठंड के मौसम में लाखों की संख्या में आते प्रवासी पक्षी एवं डॉलफिन मछली यहाँ की सुंदरता को चार चांद लगा देते है ।

घूमने का सबसे अच्छा समय - नवम्बर से फरवरी ।

5. भीतरकनिका

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से मात्र 140 किलोमीटर दूरी पर लगभग 650 वर्ग किलोमीटर मै फैला वन्यजन्तु अभयारण्य है । यह अभयारण्य, मगरमच्छ के पार्क, ओलिव रीडले कछुआ तथा सदाबहार समुद्र तट वन हेतु विश्व भर जाना जाता है । ठंडी के मौसम में नदी पर नौ-विहार के समय नदी के किनारे सोते तथा नांव के आवाज पर भागते हुए मगरमछ एवं प्रवासी पक्षी के दृश्य यहां के मुख्य आकर्षण है । वहां पर स्थित कुटीर में रत्रयापन पर हिरण, मगरमच्छ तरह तरह के समुद्र जल प्राणी एवं संवर आदि दिखाई देते है ।

घूमने का सबसे अच्छा समय - दिसम्बर से फरवरी ।

6. जयपुर

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से मात्र 600 किलोमीटर दूर तथा विशाखापट्टनम् से 215 किलोमीटर दूर स्थित शहर जयपुर प्रकृति प्रेमी यह एक रमणीय पर्यटन स्थल है । यह स्थान अपने सुरम्य जलप्रवाह, हरे भरे जीवमंडल, चट्टान बर्हिबाह एवं मंत्रमुग्ध करा देने वाले दृश्य हेतु जाना जाता है । निकट के गुफा पर अवस्थित गुप्तेश्वर शिव मंदिर, डुम-डुमा जल प्रवाह, कोलाव जलप्रवाह उस जगह के सुंदरता को चार चांद लगा देता है ।

घूमने का सबसे समय - नवम्बर से फरवरी ।

7. सिमलिपाल अभयारण्य

ओडिशा के राजधानी भुवनेश्वर से 190 किलोमीटर दूर तथा कोलकाता से 350 किलोमीटर दूर सिमलिपाल अभयारण्य भारत के 7वां बड़ा राष्ट्रीय उद्यान जीवमंडल संरक्षण हेतु प्रसिद्ध है । यहां जाना अपने मंत्रमुग्ध करा देने वाले दृश्य एवं प्रचुर मात्रा में अवस्थित रेशम कपास के पेड़ हेतु दुनिया भर में प्रसिद्ध है । चार सींग वाले हिरन, वैंगल के बाघ, जंगली हाथी तथा तरह तरह के जंगली जानवर दिखाई देते है । जंगल पर अवस्थित देवकुंड जल प्रवाह, वरेहिपाणि जलप्रवाह तथा आदिवासी जनजाति की जीवन शैली का दृश्य उस जगह के सुंदरता को बढ़ा देता है।

घूमने का सबसे अच्छा समय - अक्टूबर से फरवरी ।

8. सातकोशिआ अभयारण्य

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से 170 किलोमीटर दूर लगभग 800 वर्ग किलोमीटर तक फैला वन्यजन्तु अभयारण्य है । सातकोशिआ अभयारण्य महाबल बाघ एवं घड़ियाल मगरमछ संरक्षण हेतु वन्यजन्तु प्रेमी का यह एक रमणीय पर्यटन स्थल है । यह स्थान महानदी के सुरम्य जलप्रवाह, हरे भरे जीवमंडल, चट्टान बर्हिबाह एवं मंत्रमुग्ध करा देने वाले दृश्य हेतु जाना जाता है ।

घूमने का सबसे अच्छा समय - अक्टूबर से फरवरी ।

9. गोपालपुर

ओडिशा के राजधानी भुवनेश्वर से 170 किलोमीटर दूर तथा ब्रह्मपुर शहर से लगभग 15 किलोमीटर दूर बंगाल की खाड़ी पर अवस्थित समुद्र तट पर अवस्थिति बंदरगाह है गोपालपुर । शाम के समय पर समुद्र तट में बैठने के साथ साथ ऊंट पर घूमना एवं समुद्र किनारे पर तली हुई मछली का भोजन यहां का प्रमुख आकर्षण है ।

घूमने का सबसे अच्छा समय - अक्टूबर से मार्च ।

10. हीराकुंड बांध

ओडिशा के राजधानी भुवनेश्वर से 350 किलोमीटर दूर तथा सम्बलपुर शहर से लगभग 15 किलोमीटर दूरी पर अवस्थित महानदी नदी के ऊपर बना हुआ दुनिया का सबसे लंबा बांध है हीराकुंड बांध । दो पहाड़ लाम डूंगरी और चंदिली डूंगरी के बीच बना हुआ लगभग 5 किलोमीटर लम्बा बांध अपना खूबसूरती हेतु प्रसिद्ध है । बांध पर बनी जल विद्युत उर्जा स्टेशन दर्शन लायक है । उसके पास बनी डब्रिगड़ वन्यजन्तु अभयारण्य घूमने हेतु सैलानियों को आकर्षित करता है । प्रतिवर्ष ठंड के मौसम में लाखों के संख्या में आते प्रवासी पक्षी यहां की सुंदरता को चार चांद लगा देते है ।

घूमने का सबसे अच्छा समय - अक्टूबर से मार्च

मौनावलंबी गौरवमयी ओडिशा

श्री शैलेंद्र कुमार
हिंदी अधिकारी
कार्यालय : महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2)

अपने चारों कोनों में आश्चर्य की झलक लिए ओडिशा भारत के पूर्वी तटीय सीमा पर खड़ा एक अद्भुत राज्य है । भारतीय पृष्ठभूमि को जगमगाने वाली रत्न है ओडिशा । यह वह प्रदेश है जहां के कोने कोने में विशेषताएं है और मंदिरों की दीवारो से उगलती प्राचीन कलाकारों की आत्माएं हैं ।

तंत्र विद्या का मंदिर

चौसठ योगीनि मंदिर ओडिशा के भुवनेश्वर शहर से लगभग 15 कि.मी. दूरी पर हीरापुर नामक स्थान पर स्थित है । इसे महामाया मंदिर भी कहा जाता है । कहा जाता है कि यह तंत्र विद्या का विश्वविद्यालय प्राचीन समय में रहा है । अब इन मंदिरों को पुरातत्व विभाग के तहत नियंत्रित किया जाने लगा है अत: अब इसमें तंत्र विद्या से संबंधित कार्यें को वर्जित कर दिया गया है । यह बेहद ही अनूठा स्थल हैं । यह खुली छत वाला मंदिर होता है एवं भारतीय संसद की तरह गोल दीवारों पर 64 प्रकार की मुद्राओं में, 64 प्रकार के परिधान स्टाईल में, 64 प्रकार के केश स्टाईल में देवी की मूर्तियां है । ओडिशा के बालांगिर जिले में भी एक ऐसी ही आकृति वाला मंदिर स्थापित है । माना जाता है कि हीरापुर स्थित मंदिर 9 वीं शताब्दी में ब्रहम वंश की रानी हीरादेवी द्वारा बनवाया गया था ।

दक्षिण एशिया का सबसे बडा बौद्ध मठ

वर्ष 2010 में, दलाई लामा ने बरहामपुर के पास चंद्रगिरी में दक्षिण एशिया के सबसे बडे मठ का उद्घाटन किया । 10 एकड़ में फैले इस मठ में बुद्ध की 21 फीट ऊची मूर्ति, 17 फीट ऊंची दूसरी बुद्ध पद्म संभव और अवलोकेश्वर की मूर्ति है । मठ की आधारशिला 2003 में रखी गई थी जबकि निर्माण कार्य 2009 में आठ करोड रूपये की लागत से पूरा हुआ था ।

ओडिशा की झुकी हुई मंदिर

यह मंदिर ओडिशा राज्य में संबलपुर से 23 किमी दक्षिण में महानदी के तट पर स्थित एक गाँव हुमा में 13.8 डिग्री पर झुकी हुई स्थित है । यह मंदिर हिंदू भगवान बिमलेश्वर को समर्पित हैं ।

हालांकि यह ज्ञात नहीं है कि यह संरचना डिजाइन द्वारा या किसी अन्य कारण से झुकी हुई है । झुकाव का कारण निर्माण के समय तकनीकी खामियों को नहीं माना जा सकता है । यह भी आसानी से स्वीकार्य विचार नहीं है कि कमजोर नींव के कारण मंदिर का झुकाव हो सकता है । हो सकता है कि महानदी नदी में बाढ़की धाराओं के कारण या भूकंप के कारण जिस चट्टानी तल पर यह खडा है, उसका आंतरिक विस्थापन हो सकता है । मंदिर का आधार अपनी मूल अवस्था से थोड़ा विचलित हो गया है, और परिणामस्वरूप, मंदिर का शरीर झुक गया हैं । इस झुकाव ने इतिहासकरों, मूर्तिकारों और अन्य शोधकर्ताओं को आकर्षित किया है । आश्चर्य की बात यह है कि मुख्य मंदिर एक दिशा में झुका हुआ हैं, जबकि अन्य छोटे मंदिर अन्य दिशाओं में झुके हुए हैं । मंदिर परिसर के भीतर यानी मंदिर की सीमाओं के भीतर, सब कुछ झुकी हुई स्थिति में है, जिसमें स्वयं सीमाएँ भी शामिल हैं, और ग्रामीणों और पुजारियों का कहना है कि पिछले 40 या 50 वर्षों में झुकाव का कोण नहीं बदला है । झुकाव एक भूवैज्ञानिक कारण से हो सकता है; अंतर्निहित चट्टान संरचना में असमान हो सकती है ।

ओडिशा का कश्मीर

दारिंगबाडी पूर्वी भारत में ओडिशा राज्य के कंधमाल जिले का एक हिल स्टेशन है । व्यापक रूप से 'ओडिशा का कश्मीर' के रूप में जाना जाता है, यह 915 मीटर की ऊंचाई पर स्थित हैं और एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है ।

ब्रिटिश शासन के दिनों में डारिंग साहब नाम का एक ब्रिटिश अधिकारी था जो इस स्थान का प्रभारी था । वर्षों से इस जगह का नाम उनके नाम पर रखा गया था यहां की 50 से अधिक आबादी आदिवासी जातियों के एसटी समुदाय का गठन करती है ।

दार्रिंगबाडी का तापमान स्तर अक्सर शून्य डिग्री सेल्सियस से नीचे दर्ज किया गया है । यह जैविक हल्दी की बेहतर गुणवत्ताा के उत्पादन के लिए भी प्रसिद्ध है ।

दुनिया में सबसे बड़ा सामूहिक घोसला - ओलिव रिडले

ओडिशा दुनिया में ओलिव रिडले के लिए सबसे बडा सामूहिक घोंसला बनाने वाला स्थल है । जैसे-जैसे तापमान बड़ा और गर्म होना शुरु होता है । ओडिशा तप पर ओलिव रिडले कछुओं के लिए बडे पैमाने पर घोंसले के शिकार का मौसम शुरु हो जाता हैं । इस साल (वर्ष 2022) लाखों ओलिव रिडले समुद्री रिडले समुद्री कछुए अपने वार्षिक सामूहिक घोंसले के लिए रुशिकुल्या नदी के मुहाने पर आए हैं । ये लुप्तप्राय प्रजातियां हर साल फरवरी के तीसरे सप्ताह से मार्च के पहले सप्ताह तक घोंसले के शिकार के लिए झुंड में आती हैं । एक लंबी यात्रा के बाद, हिंद महासागर से पूरे रास्ते में, कछुए अंडे को दफनाने के बाद कुछ दिनों के लिए आराम करते हैं । इस साल (वर्ष 2022) पहले दिन 2.45 लाख ओलिव रिडले अंडे देने के लिए रेंगते हुए तट पर पहुंच ।

देश में पाए जाने वाले मगरमच्छों की तीनों प्रजातियों का घर

ओडिशा का केंद्रापडा, 29 अगस्त, 2021 को देश में पाए जाने वाले मगरमच्छों की तीनों प्रजातियों का घर होने वाला भारत का एकमात्र जिला बन गया । यह तब हुआ जब वन अधिकारियों ने जिले की एक नदी प्रणाली में एक नदी प्रणाली में एक बच्चा घड़ियाल (गेवियलिस गैंगेटिकस) पाया ।

जिले में भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान भी खारे पानी के मगरमच्छों (क्रोकोडायलस पोरोसस) का घर है । मगरमच्छ परिवार में 27 अलग-अलग प्रजातियां होती है जिन्हें तीन परिवारों मे विभाजि किया जाता है मगरमच्छ, खाड़े पानी का मगरमच्छ और घड़ियाल ।

1970 के दशक तक ओडिशा की नदियों में मगरमच्छों की सभी तीन प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर थीं । इन्हें बचाने के लिए 1960 के दशक से कई तरह के प्रयास किए जा रहे थे ।

घड़ियाल और खारे पानी के मगरमच्छ संरक्षण कार्यक्रम को पहली बार 1975 की शुरुआत में ओडिशा में लागू किया गया था और बाद में मगर संरक्षण कार्यक्रम शुरु किया गया ।

जनवरी 2021 में, भितरकनिका में 1,768 खारे पानी के मगरमच्छ थे, जबकि 1974 में मात्र 96 की संख्या में थे । वर्ष 2006 में, भितरकनिका में पाए गए एक 23 फुट के मगरमच्छ को गिनीज बुक् ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस में मुहाने का दुनिया में सबसे बडे मगरमच्छ के रूप में दर्ज किया गया था ।

विश्व की दूसरी सबसे पुरानी चट्टान

लगभग आठ साल पहले ओडिशा के केंदुझर जिले के चंपुआ से बरामद एक चट्टान के नमूने ने भारत को दुनिया में भूवैज्ञानिक अनुसंधान में सबसे आगे रखा है । वैज्ञानिको में चट्टान में मैग्मैटिक जिक्रोन (एक खनिज जिसमें रेडियोदर्मी समस्थानिकों के निशासन होते है) का एक दाना पाया है जो अनुमानित रूप से 4,240 मिलियन वर्ष पुराना है ।

कलकता विश्वविद्यालय और मलेशिया के कटिन विश्वविद्यालय के भूवैज्ञानिकों ने चात्रनीज एकेडमी ऑफ जियोलोजिकल सात्रंसेज, बीजिंग के शोधकर्ताओं के साथ मिलकर यह खोज की, जो साइर्टिफिक रिपोर्टस जर्नल में भी प्रकाशित हुई है ।

अब्दुल कलाम द्वीप

डॉ. अब्दुल कलाम द्वीप,जिसे पहले ह्वीलर द्वप के नाम से जाना जाता था, भारत के ओडिशा के तट पर खडा एक द्वीप का नाम मूल रूप से अंग्रेजी क्मांडेंट लेफ्टिनेंट ह्यूग व्हीलर के नाम पर रखा गया था । 4 सितंबर 2015 को इस द्वीप का नाम बदलकर दिवंगत भारतीय राष्ट्रपति डॉ. ए.पीजे. अब्दुल कलाम के सम्मान में रखा गया । एकीकृत परीक्षण रेंज मिसाइल परीक्षण सुविधा द्वीप पर स्थित है और भारत की अधिकांश मिसाइलों जैसे आकाश, अग्नि, अस्त्र, ब्रह्मोस, निर्भय, प्रहार, शौर्य मिसाइल, उन्नत वायु रक्षा, पृथ्वी वायु के लिए परीक्षर सुविधा के रूप में कार्य करती है ।

ओडिशा भगवान जगन्नाथ की पावन धरती है । यह भारत के चार धामें में एक प्रसिद्ध धाम की नगरी है । यहां आने मात्र से आपको आध्यात्मिकता की अनुभूति होती है । मृत्यु से पूर्व एक बार आपको ओडिशा आना चाहिए ।

पुरी : समुद्र व अद्‌वितीय अनुभव

श्रीमती रीता अग्रवाल
पत्नी - श्री गिरराज शरण अग्रवाल
हिंदी अधिकारी

बंगाल की खाड़ी में भारत का समुद्र तटीय प्रदेश उडीसा जिसे अब ओडिशा के नाम जाता है जो प्रसिद्ध है अपनी कलाकृतियों, भव्य इमारतों, मंदिरों, हस्तशिल्पों, जनजातियों, प्राकृतिक सौंदर्य, वन प्राणियों, समुद्री वन सम्पदा, खनिज तत्व के लिए। ओडिशा का जिक्र आते ही सबसे पहले पुरी, कोणार्क एवं भुवनेश्वर का चित्र मन मस्तिक मे अंकित हो जाता है। पुरी, कोणार्क एवं भुवनेश्वर को त्रिभुज भी कहा जाता है।

उपर्युक्त तीनों स्थानों में पुरी का महत्व ओर अधिक बढ़जाता है क्योंकि यह आदिशंकराचार्य द्वारा स्थापित चार धामों में से एक है। अत: महाप्रभु जगन्नाथ का सानिध्य पाये बिना मोक्ष संभव नहीं है।

पुरी के मंदिर के बाद सबसे प्रमुख आकर्षण समुद्र तट ही है। आप चाहे तो समुद्र तट पर बैठकर आप समुद्र की लहरों को गिन सकते हैं, लहरों के साथ उछल कूद कर सकते हैं। समुद्र में स्नान कर सकते हैं, फुटवीयर हाथ में लेकर समुद्र किनारे अपने साथी का हाथ पकड़कर फिल्मी स्टाईल में वॉक कर सकते है, लहरों के साथ कबड्डी खेल सकते हैं, समुद्र किनारे जॉगिंग कर सकते हैं, सूर्योदय एवं सूर्यास्त के साक्षी बन सकते हैं। चाय/कॉफी की चुस्कियां ले सकते हैं, गरमागरम समोसे एवं रसगुल्लों का आनंद ले सकते है यानि समुद्र तट पर हर आयु वर्ग के लिए इतना कुछ है कि समय कब व्यतीत हो जायेगा आपको पता ही नहीं चलेगा।

इसी तारतम्य में हम आपको पुरी स्थित विभिन्न समुद्र तट से परिचित करा रहे हैं। इसमें सबसे प्रमुख बीच (Beach) है।

1) गोल्डन बीच : यह पुरी का सबसे प्रमुख बीच है जो शहर के बीच में स्थित है। यह पुरी स्थित ऐसा बीच है जहां पुरी आने वाला हर पर्यटक आता ही है। इस बीच पर हमेशा भीड़भाड़ रहती है। आपको यहाँ हर आयु एवं हर वर्ग के पर्यटक हमेशा मौज मस्ती करते हुए मिल जायेगें। समुद्र की लहरों के संगीत का आनन्द उठाते हुए रुक–रुक कर शंखनाद इस बीच का प्रमुख आकर्षण है। ठंडी समुद्री हवाओं के मध्य घोड़े की सवारी और ऊंट की सवारी

करने से आपको राजा और महाराजा जैसी अनुभूति होगी।

इसके अतिरिक्त, गोल्डन बीच का विस्तर स्वर्गदवार तक है। जहाँ से पैदल चलकर जगन्नाथ मंदिर भी जाया जा सकता है। गोल्डन बीच सी फुड लवर्स (Sea Food Lovers) के लिए स्वर्ग जैसा है, जहाँ कई प्रकार की समुद्रीय जीव जंतु आपकी पेट अग्नि को शांत करने के लिए विभिन्न स्टॉलों पर सजे रहते है।

2) निलाद्री बीच : यदि आप पुरी में समुद्र तट का आनन्द शांति से उठाना चाहते है तो यह आपके लिए एकदम उपयुक्त बीच है। यह बीच मोटी सीटी रोड पर होटल मेफेयर के पास स्थित है। इस बीच को ओडिशा सरकार दवारा योजनाबद्ध तरीके से तैयार किया गया है। निलाद्री बीच के मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही निलाद्री स्थान, जहाँ एक एम्फीथियेटर, ओपन जिम भी है। पर्यटकों की सुविधा के लिए भुगतान कर उपयोग करने वाले वाशरुम भी उपलब्ध है।

निलाद्री बीच पर पहुँचते ही आपको एहसास होगा कि आप विदेश के किसी समुद्री बीच पर पहुँच गये हैं। अत्यंत मनोरम प्राकृतिक, लॉन, गार्डन, बीच हट, डेस्क चेयर के साथ लोग अपने आप में व्यस्त दिखेंगे । इसके अतिरिक्त शनिवार एवं रविवार को विशेष नाइट मार्केट का आयोजन किया जाता है जिसमें उडिया व्यंजन, कलाकृतियाँ, के स्टॉल होते हैं साथ ही नाच गाने का भी आयोजन किया जाता है। कोई एक गिटारिस्ट अपनी धुन से आपके मन की तान को कब छेड़ देगा आपको पता ही नहीं चलेगा। लाइटों के मध्य यह बीच एवं पार्क और भी अधिक आकर्षक हो जाता है।

3) ब्लूफ्लैग बीच : यह बीच भी पुरी के मध्य में स्थित है। इसे हाल ही में ओडिशा सरकार दवारा विकसित किया गया है। यह गोल्डन बीच का हिस्सा था। ब्लूफ्लैग बीच को भारत के सबसे स्वच्छ बीच का दर्जा प्राप्त है। यह ओडिशा का आधुनिकतम बीच है। विभिन्न स्थानों की दीवारों पर ओडिशा से संबधित कलाकृतियों को अंकित किया गया है। जो बीच को अत्यंत ही आकर्षक बना देते हैं। बीच पर पर्यटक यदि इस बीच पर स्नान करना चाहते हैं तो उसके लिए आपको रुपये 50/- का भुगतान करना होगा। पुरुषों एवं महिलाओं के लिए अलग-अलग सावर एवं चेंजिग रुम भी है। यहां आपकी सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे, लाइफगार्ड भी उपलब्ध है। बीच पर हमेशा मध्यम आवाज में संगीत बचता रहता है जो आपके यात्रा अनुभव को और अधिक यादगार बना देता है। मध्य से लेकर रात्रि तक प्रकाश की भी पर्याप्त व्यवस्था है।

इस प्रकार यह बीच अपनी टैगलाइन Sky above, Sand below and Peace within को पूरी तरह से चरितार्थ करता है।

श्री जगन्नाथपुरी धाम

सुश्री तितली पंडा, कक्षा-12
सुपुत्री- श्री गंगाधर पंडा
सहायक पर्यवेक्षक

स्मरगरलखंडनं ममशिरसि मंडनं देही पदपल्लवमुदारम्,
ज्वलतिमयी दारुणोमदनकदनारुणो हरतु तदुपहितविकारम्,
इति चटुलचाटुपटुतारुमुरबैरिणो राधिकामधिवचनजातम्,
जयति पद्मावतीरमण जयदेवकवि भारतीभणितमतिशातम्॥

प्रभु श्री जगन्नाथ जी के परमभक्त और श्रीगीतगोविंद के रचनाकार कवि श्री जयदेव जब श्री गीतगोविंद रचना कर रहे थे तब संशय में थे कि परमपूज्य लीलाधर श्रीकृष्ण के बारे में उपर्युक्त श्लोक किस प्रकार लिखा जाए, क्योंकि ऐसे-वैसे लिख देने से परमब्रह्म जगन्नाथ जी के लिए सटीक नहीं हो सकता जब स्वयं श्री कृष्ण अपनी आल्हादिनी राधारानी से कह रहे कि ' प्रिय आपका चरण मेरे सर पर रखो'' । चिंतित श्रीजयदेव जब नहाने गए थे तब प्रभु श्री जगन्नाथ श्रीजयदेव के वेश में आकर उपर्युक्त श्लोक लिख दिये थे । श्री गीतगोविंद पुरीधाम का श्रीमंदिर में प्रभु श्री जगन्नाथ जी के सामने रोज गाने का रिवाज है ।

विश्व के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक है पुरी का श्रीमंदिर । वास्तुकला की कलगिंशै में रचित यह मंदिर 65 मीटर ऊंचाई और 4.00.000 वर्गफुट तक विस्तरित है । इस को बनाने में तीन पीढ़ियां लगी थी । इसकी शुरुआत गंग राजवंश के राजा अनंतवर्मा चोगंगदेव ने किया था और 1200 सदी में उनके पोते राजा अनंगभीमदेव के द्वारा पूरा किया गया था, ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर का सतयुग में बनाया गया था राजा इंद्रद्युम्न एक वैष्णव थे और उनका राज्य अवंति (अधुना आध्रप्रदेश) से मालवा (अधुना राजस्थान) तक विस्तारित था । हर वैष्णव की भांति उनकी भी यही इच्छा थी कि जीवन मे अपने प्रभु के साक्षात दर्शन का अवसर मिले । वह प्रभु की एक झलक को आतुर थे ।

भक्त और भगवान का संपर्क कुछ ऐसा है कि भगवान भक्त को निराश नहीं करते । एक दिन एक पथिक महाराजा इंद्रद्युम्न से मिले और उनको ऊड्रदेश (ओडिशा) के बारे में बताते हुए यह जानकारी दी कि शवर (आदिवासी) राजा विश्वावसु जंगल में एक गुफा में प्रभु नीलमाधव (प्रभु जगन्नाथजी के दूसरा नाम) की पूजा गोपनीय तरीके से कर रहे है । यह सुनने के बाद महाराजा इंद्रद्युम्न को लगा जैसे प्यासे को पानी मिल गया । वे तुरंत विश्वावसु और उनकी गुप्त गुफा का पता लगाने के लिए अपने खास दूत विद्यापति को भेजा । राजा के आदेशानुसार विद्यापति ऊड्रदेश आते है तथा अपना परिचय गुप्त रख कर शवर आदिवासी के वेश में शवर राजा विश्वावसु की पुत्री ललिता से उनको प्यार हो जाता है और विश्वावसु के अनुमति से दोनों का विवाह भी हो जाता है । जो उद्देश्य लेकर वो आए थे वे भूले नहीं थे । एक दिन की बात है उन्होंने देखा उनके ससुरजी आधी रात को बाहर कहीं गये और अगले दिन सुबह लौटे। उनके शरीर से चंदन-कस्तूरी की मीठी सुगंध आ रही थी ऐसा कई बार हुआ जो कि विद्यापति के मन को संशय में डाल रहा था । तो एक दिन उन्होंने इस बारे में अपनी पत्नी ललिता से पूछा परंतु ललिता ने कई बार इस बात को टाल दिया । बार-बार उनके आग्रह पर ललिता ने एक दिन अपने पिता के

निर्देश के खिलाफ जाकर अपने पति विद्यापति को यह बता दिया कि उनके पिता नीलमाधब जी के पूजा करने के लिए जंगल की एक गुफा में जाते है और वहां किसी भी अनजान या विदेशी आदमी का जाना सख्त मना है।

विद्यापति इसी खोज में आये थे । वह उस जगह को जाने के लिए बहुत उत्सुक थे । उन्होंने ललिता से आग्रह किया कि वह उन्हें वहां ले चले । ललिता बड़ी असंमजस की स्थिति में पड़ गई । एक ओर अपना पति देव तो दूसरे और अपने पिताजी । वह जानती थी अपना पिता विश्वावसु बड़े कठोर किस्म के आदमी हैं अगर किसी अनजान या विदेशी आदमी ने ऐसा हरकत की तो उसका वहां से जीवित लौटना मुश्किल है । विद्यापति गुमसुम होकर ललिता पर दबाव डाला कि वह पिताजी को ना बताकर उनको वहां ले चले । ललिता उन्हें वहां ले जाने को आखिरकार राजी हो गई परंतु एक शर्त पर कि विद्यापति के आखों पर पट्टी बाँधी जाएगी ताकि उनको रास्ते की दिशा पता ना चले । चतुर विद्यापति वहां जाने से पहले अपने अंगोछे में ललिता से नजर बचा कर कुछ सरसों के दानें छिपा दिए और जब तक गुफा तक ना पहुंचे तब तक रास्ते पर वह थोड़े-थोड़े सरसों के दानें डालते गए । गुफे में पहुंचकर जैसे ही उन्होंने आँखों से पट्टी खुली और प्रभु नीलमाधवजी को देखा उनकी आँखें खुली की खुली रह गई । घोर अंधेरे से घिरे जंगल में गुफा के अंदर दिव्य-ज्योति चमक रही थी और चारों ओर चंदन-कस्तूरी की महक भरी हुई थी। उन्होंने सोचा कि जिनका संधान और दर्शन के लिए वह रात-दिन एक कर दिए थे वह तो ये है ! पूजार्चना के बाद फिर से उनके आँखों पर पट्टी बांध दी गई और वे ललिता के साथ घर लौट आए । उनका लक्ष्य सफल हुआ था । कुछ दिन के बाद वह अपने राज्य वापस चल गए और जाने से पहले ललिता से वादा कर के गए कि थोड़े दिनों के बाद फिर आ कर उन्हें अपने साथ ले जाएंगे ।

अपने राज्य में पहुंचकर विद्यापति महाराज इंद्रद्युम्न को सारा समाचार सुनाते हैं । राजा ने विस्वावसु से मांग कर या युद्ध में हरा कर प्रभु नीलमाधव को ले आना चाहा । लेकिन विद्यापति को झगड़ा पसंद नहीं था तो उन्होंने दूसरा रास्ता अपनाया । वे दोनों गुप्त रूप से वहां चलने लगे । ललिता के साथ पहली बार गुफा में जाने के वक्त रास्ते में विद्यापति ने जो सरसों के दानें डाल गये थे, बारिश में उन में से छोटे-छटे पौधे ऊग आये थे और गुफा को जाने के लिए रास्ता ढूंढने में ये मद्दगार साबित हो रहे थे । वहां पहुंचकर वे दोनो प्रभु नीलमाधब जी को प्रणाम किया और सोचा प्रभु कितने दिन तक ऐसे गोपनीय तरीके से पूजा पाते रहेंगे । सारे विश्व को प्रभु का दर्शन करना चाहिए। यह सोचकर वे प्रभु नीलमाधब जी को अपने राज्य को ले चल दिये ।

द्वापर युग के अंत के समय में प्रभु श्रीकृष्ण जी ने अपनी लीला रचते हुए और महाभारत युद्ध में दुर्योधन की मृत्यु के पश्चात् उसकी माता गांधारी से मिले श्राप जिसमें श्रीकृष्ण और उनके यदुवंश विनाश की बात कही गई है, उसको सच करने के लिए यदुवंश को विनाश कर देना चाहा । अब उनका पृथ्वी पर अधिक समय रहना उचित नहीं था । क्योंकि महाबली कंस जिसको खत्म करने के लिए वह धरा पर अवतरित हुए थे लेकिन वह तो मर चुका था । यदुवंश विनाश के बाद श्रीकृष्ण एक पेड़ के नीचे अपने तलवों को मृगाकार आसन में रख के थोड़ा विश्राम ले रहे थे । तभी जंगल में रहनेवाला आदिवासी जरा शवर वहां आता है और दूर से श्रीकृष्णजी के तलवी को हिरण का कान समझ कर अपना तीर चला देता है । जब उसे वास्तविकता पता चलता है कि वह जिन्हें हिरण समझ कर तीर चला दिया वह और कोई नहीं वह स्वयं श्रीहरि है तो वह थर्र-थर्र कांप उठता है और प्रभु श्रीकृष्ण से माफी मांगता है । तब करुणामय श्रीहरि उसे कहते कि तुम त्रेतया युग में अंगद थे और मैंने आपके पिता बालि की हत्या की थी । तब तुम ने मुझे हत्या करने की संकल्प किया था जो कि मैने इस द्वापर युग में पूरी कर दी । इस तरह उसे सांत्वना देते हैं और अपना चतुर्भुज रूप देखाकर उनके देहावसान की खबर अर्जुन को देने को कह कर श्री हरि वापस बैकुण्ठ (स्वर्ग) चल जाते हैं । जरा शवर से यह बात मालूम होने पर अर्जुन बहुत दु:खी हुए और श्रीकृष्णजी के देह को दाह-संस्कार करने लगे । सब जल गया लेकिन श्रीकृष्णजी के हृदय ना जल पाने के कारण उसे समंदर में बहा दिया । कहा जाता है शवर राजा विश्वावसु शायद श्रीकृष्णजी के इसी अध-जली देहावशेष जो कि अबतक बहता ही दिख रहा था और उस में से दिव्य-ज्योति निकल रही थी - किसी संयोग से पा कर उसे नीलमाधबजी के रूपसे पूजा कर रहे थे जिसे विद्यापति और महाराज इंद्रद्युम्न ले चले थे ।

अपने राज्य में पहुंचकर महाराज इंद्रद्युम्न ने सोचा विस्वावसु से प्राप्त नीलमाधवजी (ब्रह्म) को किसी साकार विग्रह या मूर्त्ति से रख कर

पूजा किया जाना चाहिए । एक दिन वह सपने में देखते कि जैसे प्रभु श्रीकृष्णजी उन्हें कह रहे है कि पुरी के बांकमुहाण में एक दारु (लकड़ी) तैरता हुआ दिखाई देगा । उस में मूर्त्ति तैयार कर के उस में विश्वावसु से प्राप्त नीलमाधबजी को प्रतिष्ठा किया जाए । सपने कभी कभी सच भी होते है सोच कर महाराज इंद्रद्युम्न वहां गये और सचमुच एकदारु (लकड़ी) देखा जिस में शंख-चक्र-गदा-पद्म आदि का चिह्न साफ दिखाई दे रहा था । उसे वह भव्य शोभायात्रा से मंदिर ले जाए । लेकिन मूर्त्ति का स्वरूप कैसे हो वह कई दिन तक तय नहीं कर पाए । भक्त का मन भगवान ही जानते हैं, स्वर्ग के बढ़ई विश्वकर्मा अपना रूप बदल कर एक बूढ़े वेश में महाराज त्रंद्रद्युम्न के पास आते हैं और राजाको अपना परिचय अनंत महारणा कह कर देते है कि भगवान के उपयुक्त और वांछित मूर्ति वह बना देंगे । राजा के पास और कोई उपाय नहीं था क्योंकि कोई भी उपयुक्त मूर्ति बनाने से कतराता रहा क्योंकि किसी को पता नहीं था कि राजा के वांछित मूर्ति के स्वरूप कैसे था । बूढ़े वेश में आये विश्वकर्मा एक बंद कमरे में मूर्ति निर्माण में लग गये और सभी को सख्त हिदायत दी कि जब तक वे स्वयं कमरे से बाहर ना आयें तब तक कोई बंद कमरे का दरवाजा खोलने का प्रयास ना करें। कुछ दिनों तक औजारों की आवाज कमरे से आती रही । परंतु थोड़े दिनों के बाद कोई आवाज सुनाई नहीं दी । महाराज इंद्रद्युम्न की पत्नी गुंडिचादेवी को शक हुआ कि हीं वह बूढ़ा आदमी बिना खाने-पीने के कारण मर गए । सो वह जबरदस्ती कमरे का दरवाजा खोल दीं और देखी कि वह बूढ़ा आदमी गायब था और पीछे तीन अर्धनिर्मित मूर्तियां छोड़ गया था। तभी शून्यवाणी होती है कि ''राजन ! आपने अपना वादा तोड़ दिया और समय से पूर्व दरवाजा खोल दिया । शोक ना करें, उन में विश्वावसु से प्राप्त नीलमाधवजी (ब्रह्म) को स्थापित कर पूजा करें । अब मैं स्वयं को इसी रूप में भक्तों के सामने प्रकट करुंगा ।''

महाराज इंद्रद्युम्न ने पुरी या नीलांचल धाम में नील-पर्वत पर भव्य श्रीमंदिर निर्माण कर के वहां विश्वकर्मा के अर्धनिर्मित मूर्तियां स्थापना की और एक विशेष मुहूर्त्त में उन में नीलमाधवजी (ब्रह्म) को स्थापना कर के पूजार्चना शुरु कर दी । युग बीत गये । महाराज इंद्रद्युम्न के द्वारा निर्मित मंदिर बालू से ढक गया । उन के बाद राजा गालमादव राज्य को शासन कर रहे थे । एक दिन वह घोड़े पर कहीं जा रहे थे । तब घोड़े की पैर किसी चीज से टकराया और वह घोड़े के साथ गिर पड़े । खुदाई करने पर पता चला कि वहां एक भव्य मंदिर है और अंदर में प्रभु वलभद्र, देवी सुभद्रा और प्रभु श्रीजगन्नाथ जी के अपूर्व प्रतिमाएं हैं । वे रेत हटा कर उस मंदिर में पूजार्चना शुरु कर दिया । समय की गति के साथ मंदिर को राजा अनंतवर्मा चोडगंगदेव ने फिर से निर्माण किया जो कि पहले ही कहा जा चुका है ।

उनके उत्तर पुरुष कहीं गर्व ना करें कि उन्हीं के द्वारा श्रीमंदिर बनवाया गया था । इसलिए महाराजा इंद्रद्युम्न स्वयं अपनी इच्छा से बेऔलाद रहने की संकल्प लिए थे । इस बात का पता चलने पर महाराणी गुंडिचा देवी दु:खित हुई । तब शून्यवाणी हुई ''देवी ! शोक ना करें । हर साल हम 9 दिन तक हमारी जन्म-वेदी गुंडिचा मंदिर आते रहेंगे ।'' इसलिए हर साल श्रीजगन्नाथ महाप्रभु अपने बड़े भैया बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ गुंडिचा मंदिर जाते है जो कि रथयात्रा के नाम से मशहूर है ।

ऐसे हैं हमारे प्रभु श्रीजगन्नाथ । जितनी मधुर उनकी हर लीला है, उतनी मधुर उनके प्रति हम सबका भाव है । अपने भक्तों के कण-कण में वही हैं और अपने हृदय रूपी श्रीमंदिर में भी वह सदा पूजे जाते हैं ।

- हरे कृष्ण

रथ महोत्सव

श्री कालिप्रसाद मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

रथ महोत्सव का उत्सव ओडिशा में एक सदियों पुरानी परंपरा है । 'रथ' का उल्लेख ऋग्वेद, अथर्ववेद में मिलता है । बाद में ऐसा उल्लेख संस्कृत के एक महत्वपूर्ण महाकाव्य 'शतपथ ब्राह्मण' में देखा गया । पूरे विश्व में एक रथ द्वारा सूर्य देव की गति को मजबूती से स्थापित किया गया है । ऋग्वेद में सूर्य को मित्रता के देवता (मित्र देवता) के रूप में स्वीकार किया गया है । समय के साथ कई देवी-देवता सूर्य देव और रथ की गति से जुड़े हुए थे । भगवान सूर्य को पूरे विश्व में ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में स्वीकार किया गया है ।

जगन्नाथ मंदिर के अभिषेक के समय यानी गुंडिचा ने भगवान जगन्नाथ से अनुरोध किया कि वे वर्ष में कम से कम एक बार अपने जन्मस्थान यानी गुंडिचा मंदिर की यात्रा करें । मां गुंडिचा के अनुरोध का सम्मान करते हुए भगवान जगन्नाथ साल में एक बार गुंडिचा मंदिर के दर्शन करते हैं । इसलिए त्योहार का नाम गुंडिचा यात्रा है । भगवान जगन्नाथ के मुख्य मंदिर और पार्श्व देवताओं के मंदिरों में मनाए जाने वाले असंख्य त्योहारों में से, रथ महोत्सव को सबसे महत्वपूर्ण त्योहार माना गया है । अब तक विदेशों में 100 से अधिक जगन्नाथ मंदिरों का निर्माण किया गया है और 60 जगन्नाथ मंदिरों में रथ महोत्सव मनाया जाता है । रथ महोत्सव के अन्य नाम अर्थात् रथ यात्रा, श्री गुंडिचा यात्रा, नबा दिनात्मक यात्रा, पतित पाबन यात्रा, घोष यात्रा, महाबेदी यात्रा, दक्षिणाबिमुखी यात्रा, दशा अबतार यात्रा, अतपा यात्रा आदि का संगठन से संबंधित विशिष्ट महत्व और दर्शन है रथ महोत्सव । चूंकि भगवान जगन्नाथ सभी भक्तों को आनंद देने की घोषणा करते हैं, इसलिए इसे घोष यात्रा का नाम दिया गया है । घोष का अर्थ सार्वजनिक रूप से घोषणा या घोषणा करते है, इसलिए इसे घोष यात्रा का नाम दिया गया है । घोष का अर्थ सार्वजनिक रूप से घोषणा या घोषणा करना है । चूंकि भगवान जगन्नाथ 9 दिनों के लिए भव्य मंदिर छोड़ देते हैं और श्री गुंडिचा मंदिर में दर्शन करके वापस लौटते हैं, इसलिए इसे नबदिनात्मका यात्रा भी कहा जाता है ।

रथ उत्सव को पतितपावन यात्रा भी कहा जाता है । 'पतिता' का अर्थ है दलित और 'पावन' का अर्थ है रथ महोत्सव के इतिहास को शुद्ध करना या हटाना प्रभात कुमार नंदा पाप के प्रभाव रथ महोत्सव के दौरान, सभी धर्मों के भक्तों को रथों पर अपने भाई, बहन और हथियार के साथ भगवान जगन्नाथ को देखने की गुंजाइश होती है । मंदिर प्राधिकरण के प्रशासनिक आदेशों के अनुसार, केवल रुढ़िवादी हिंदूओं को ही मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति है । दुनिया के सभी धर्मों के भक्तों को मोक्ष प्रदान करने के लिए, भगवान जगन्नाथ दर्शन (दर्शन) की सुविधा के लिए, भव्य मंदिर से ग्रैंड रोड पर आते हैं । इसलिए इसे पतितपावन यात्रा कहा जाता है ।

रथ भव्य मंदिर के प्रवेश द्वार से उत्तर की ओर बढ़ते हैं और भव्य मंदिर तक पहुंचने के लिए उत्तरी से दक्षिणी दिशा में वापस लौटते हैं । इसलिए त्योहार को दक्षिणाभिमुखी यात्रा भी कहा जाता है । गुंडिचा मंदिर में मौजूद गर्भागृह का दूसरा नाम अदपा मंडप है । चूंकि भगवान जगन्नाथ अदपा मंडप पर रथ महोत्सव के दौरान रहते है, इसलिए इस उत्सव को अदपा यात्रा भी कहा जाता हैं । रथ महोत्सव के दौरान दस

अवतारों के धार्मिक संस्कार मनाए जाते हैं और विभिन्न रथों पर भगवान के विभिन्न अवतारों की छवियां भी स्थापित की जाती है । इस महत्व को ध्यान में रखते हुए, त्योहार को दसा अवतार यात्रा भी कहा जाता है । हालांकि इस त्योहार को हिंदू धर्म के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों द्वारा अलग-अलग नाम दिया गया है, लेकिन मुख्य रूप से यह त्योहार रथ यात्रा यानी रथ फेस्टिवल के नाम से प्रसिद्ध है ।

विभिन्न धार्मिक महाकाव्यों यानी 'पुराण' में विभिन्न देवी-देवताओं से जुड़ी रथ के महत्व के बारे में बताया गया है । 'भविष्योत्तर पुराण' में, यह उल्लेख किया गया है कि, राजा हिरण्य कश्यप के पुत्र 'प्रहलाद को महाविष्णु के रथ को खींचने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । 'पद्म', 'स्कंद' और 'भव्य पुराण में भी रथ खींचने का उल्लेख मिलता है । वैष्णव धर्म के भक्त बरसात के मौसम के अंत में और कार्तिक के महीने के दौरान भगवान विष्णु के रथ महोत्सव का जश्न मना रहे थे । भगवान कृष्ण के रथ का वर्णन 'भागबता' और 'महाभारत' में किया गया है । लिंगराज नामक भगवान शीव का रथ महोत्सव ओडिशा में प्रसिद्ध है । गर्मी के मौसम में यानि बैशाख के महीने में नेपाल में भैरव और भैरवी का रथ महोत्सव मनाया जाता है । कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि से लेकर पूर्णिमा तक महादेवी अर्थात देवी विभिन्न स्थानों का भ्रमण करती हैं । ऐसा देवी पुराण में स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है ।

चीनी तीर्थयात्री फाह्यान ने 5वीं शताब्दी ईसवी के दौरान खोतान में मनाए जाने वाले महोत्सव के बारे में उल्लेख किया है । स्नान समोराह का वर्णन वर्तमान स्नान यात्रा उत्सव के समान है । उन्होंने बरसात के महीनों के दौरान रथ महोत्सव के उत्सव और पुरुषोत्तम क्षेत्र के राजा द्वारा रथ की सफाई का भी उल्लेख किया । भारत के अलावा, सिलोन (श्रीलंका) और चीन में भी बुद्ध धर्म का प्रभुत्व था । हर साल गौतम बुद्ध के दांत के अवशेष को हाथी की पीठ पर रखा जाता है और जुलूस में इलाके के विभिन्न क्षत्रों में ले जाया जाता है और पूर्ण स्थान पर लाया जाता है । इस तरह के अवशेष को छह दिनों तक रखने के बाद, फिर से भव्य मंदिर में लौटा दिया जाता है । बुद्ध अवशेष को जुलूस में निकलने और छह दिनों के बाद वापस लौटने की प्रक्रिया पुरी के रथ महोत्सव के समान है ।

जगन्नाथ मंदिर में रखे गए क्रॉनिकल 'मडाला पंजी' से पता चलता है कि, 16 वीं शताब्दी के दौरान राजा बीरा नरसिंह देबा ने ग्रांड रोड पर बहने वाली नदी को रेत से भर दिया और भव्य मंदिर से श्री गुंडिचा मंदिर तक तीन रथों की आवाजाही की सुविधा प्रदान की । पहले भव्य मंदिर से बदसंखा और फिर नदी के दूसरे किनरे से गुंडिचा मंदिर तक आवाजाह के लिए छह रथों का निर्माण किया गया था । कुछ इतिहासकारों का यह भी मत है कि, राजा लंगुला नरसिंह देव के शासनकाल के दौरान छह के बजाय तीन रथों का प्रावधान पेश किया गया था । ओडिशा के कवियों में से एक श्री भिखारी पटनायक ने रथ के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करते हुए 'रथ चकडा' नामक एक पुस्तक की रचना की । 1859 ईस्वी के दौरान जारी पुस्तक से पता चलता है कि, 8वीं और 9वीं शताब्दी के राजा जजाति केशरी पुरुषोत्तम क्षेत्र में रथ महोत्सव मना रहे थे । ऐसे वर्णन के अनुसार भगवान जगन्नाथ के रथ की लंबाई 48 हाथ थी, मूर्ति की ऊंचाई दो हाथ और दस अंगुल की थी । रथ की ऊँचाई आठ हाथ थी । सभी रथ समान ऊँचाई के थे । राजा जजाति केशरी के काल में छह रथों का निर्माण किया गया था । बालगंडी पहुंचने के बाद, तीन रथों में मूर्तियों को नावों द्वारा मालिनी नदी के दूसरे तट पर ले जाया गया और फिर नावों द्वारा नदी के दूसरे तट पर ले जाया गया और फिर अन्य तीन रथों द्वारा मूर्तियों को गुंडिचा मंदिर ले जाया गया । नदी को बदनई भी कहा जाता था ।

भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा के रथों के पहियों की संख्या आज की तुलना में सोलह, चौदह और बारह थी । मालिनी नदी के किनारे से गुंडिचा मंदिर तक इस्तेमाल किए जाने वाले रथ चार पहियों वाली गाड़ियों की तरह से ह्रते है । भव्य मंदिर से बालागंडी तक के क्षेत्र का नाम बदादंडा है, जबकि मालिनी नदी के दूसरे तट से गुंडिचा मंदिर तक के क्षेत्र का नाम शारदाबली है । कुछ इतिहासकारों ने राजा परसु केशरी के शासन का उल्लेख किया है । उन्होंने दो साल तक शासन किया लेकिन मूसलाधार बारिश के कारण रथ उत्सव का आयोजन नहीं कर सके । कुछ इतिहासकारों का मत है कि चोल गंगा देबा ने 125 हाथों की ऊंचाई वाले मंदिर का निर्माण किया था । रथ 32 हाथ ऊँचा था क्योंकि मूर्तियाँ लघु आकार की थीं । रथों को छह हाथियों ने खींचा था । इस अवधि के दौरान छह रथों का निर्माण किया गया था । हाथियों के अलावा, राजा और उनके शाही सेवक भी रथ को खींच रहे थे । रथों के निर्माण के लिए 'रथकर' नामक कुशल

बढ़ई के एक समूह को राजा रघबा देबा ने आमंत्रित किया और उन्हें मधुपुरपटना के चुडांगसाही में बसाया । ओडिशा के एक प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. नीलकांत मिश्रा ने कहा कि माधबाचार्य, बैसनावा विद्वान ने 1270 ईस्वी के दौरान श्रीक्षेत्र का दौरा किया और भव्य मंदिर से गुंडिचा मंदिर तक मूर्तियों की आवाजाही के लिए छह रथों के प्रावधान की निंदा की । उनके मतानुसार एक बार विशिष्ट रथों में मूर्तियाँ स्थापित हो जाने के बाद गंतव्य तक पहुँचने तक नीचे नहीं उतरना चाहिए । उन्होंने इसे एक अधार्मिक गतिविधि के रूप में माना । अनंग भीम देवा के पुत्र राजा भानु देवा ने 1264 से 1278 ई की अवधि के दौरान मालिनी नदी को रेत से भर दिया । उपरोक्त कथन सही प्रतीत होता है जैसा कि जगन्नाथ संस्कृति के कई विद्वानों ने स्वीकार किया है ।

रहस्यों एवं चमत्कारों से परिपूर्ण श्री जगन्नाथ पुरी

श्री राजेश कुमार झा
वरि. लेखापरीक्षक
कार्यालय : महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2)

नीलांचल निवासाय नित्याय परमात्मने
बलभद्र सुभद्राभ्यां जगन्नाथाय ते नमः ।
जगदानंदकंदाय प्रणकार्तहराय च
नीलांचलनिवासाय जगन्नाथाय ते नमः ।।

हिंदू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भारत में अवस्थित चारधाम देश की चार अलग अलग दिशाओं में मौजूद है - उतर दिशा में बद्रीनाथ (उत्तराखंड), दक्षिण में रामेश्वरम् (तामिलनाडु), पूर्व में जगन्नाथ पुरी (ओडिशा) और पश्चिम में द्वारकापुरी (गुजरात) ।

ओडिशा राज्य के पुरी जिले में स्थित होने के कारण भारत के चार धामों में से एक धाम कहे जाने वाछे श्रीजगन्नाथ धाम को जगन्नाथ पुरी कहा जाता हैं । जगन्नाथ भगवान श्रीकृष्ण का ही एक नाम है जो दो शब्द जगत् और नाथ से मिलकर बना है जिसका अर्थ होता है - जगत् यानि संसार का स्वामी । पुराणों में जगन्नाथ धाम की महिमाओं का काफी वर्णन मिलता है, इसे धरती का बैकुंठ भी कहा गया है । जगन्नाथ मंदिर में भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलभद्र यानि बलराम एवं उनकी बहन सुभद्रा की पूजा की जाती है । यह दुनिया का एक मात्र मंदिर है जहाँ भाई-बहन की एक साथ पूजा की जाती है । मंदिर में भगवान जगन्नाथ की प्रतिमा दायीं तरफ स्थित है, बीच में उनकी बहन सुभद्रा की प्रतिमा है और बाई तरफ बड़े भाई बलभद्र (बलराम) विराजते है । महाप्रभु जगन्नाथ को कलयुग का भगवान भी कहा जाता है । इस मंदिर को श्रीक्षेत्र, श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र, शाक क्षेत्र, नीलांचल, नीलगिरि नामों से भी जाना जाता है । जब श्रीकृष्ण धर्म स्थापना के लिए धरती पर अवतरित हुए तब उनके पास अलौकिक शक्तियाँ थी लेकिन शरीर मानव का था । जब धरती पर उनका समय पूरा हो गया तो वो शरीर त्यागकर अपने धाम चले गए । इसके बाद पांडवों ने उनका अंतिम संस्कार किया लेकिन शरीर ब्रह्मलीन होने के बाद भी उनका हृदय जलता ही रहा । पांडवों ने इसे जल में प्रवाहित कर दिया । जल में हृदय ने लट्ठे का रूप धारण कर लिया और ओडिशा के समुद्र तट पर पहुँच गया । वही लट्ठा मालवा नरेश इंद्रद्युम्न, जो भगवान विष्णु के भक्त थे, को मिला जो आगे चलकर पूर्ति का निर्माण करवाये।

महाभारत के वनपर्व इस मंदिर का प्रथम प्रमाण मिलता है । जिसके अनुसार मालवा के तेजस्वी एवं विष्णु भक्त राजा इंद्रद्युम्न को भगवान जगन्नाथ ने स्वप्न में आदेश दिये कि नीलांचल पर्वत को मंदिर बनावाकर उसमें स्थापित करें । अगले ही दिन राजा ने अपने करीबी ब्राह्मण विद्यापति को सैनिकों के साथ नीलांचल पर्वत भेज दिये ।

विद्यापति को पता था कि सवर क्वीले का मुखिया विश्वावसु नीलमाधव का उपासक है और वह आसानी से मूर्ति राजा को नहीं सौंपेगा । अत: चतुर विद्यापति मुखिया को बेटी से विवाह कर लेते है और अपनी पत्नी की सहायता से गुफा से मूर्ति चुशकर राजा इंद्रद्युम्न को सौंप देते है ।

आरी, छेनी और हथौड़ी को आवाजें आता रही । लेकिन राजा की पत्नी गुंडिचा जब कतरे के समीप गई तो उन्हें एसा कोई आवाज नहीं सुनाई पड़ा तो उन्हें लगा कि शायद कारीगर मर तो नहीं गया । उन्होंने जब राजा को इस बारे में बतायी तो सभी शर्तो और चेतावानियों को अनसुना करते हुए राजा में कमरे का दरवाजा खोलने का आदेश दिया ।

महाप्रभु श्री जगन्नाथजी के मानवीय लीला

श्री गंगाधर पंडा
सहायक पर्यवेक्षक

''भुवनेश्वर रे पदचिह्न परे लेखाअछि राजाराणी,
नीलाचल धामे पूजा पाउछंति हिंदुजाति मथामणी।'

यह बात ओडिशा के प्रख्यात कवि, लेखक, समाजसेवक और स्वाधीनता संग्रामी उत्कल गौरव मधुसूदन दास कह गये है जब वह स्वतंत्र ओडिशा प्रदेश का गठन के लिए निरंतर प्रयासरत थे । नीलाचल धाम यानि पुरीधाम में हिन्दू जाति के माथे की टीका या मथामणि श्री जगन्नाथ महाप्रभु पूजा जा रहे हैं । पुरीधाम को नीलांचलधाम भी कहा जाता है क्योंकि प्रभु श्री जगन्नाथ जी का मंदिर नील-अंचल यानि नील पर्वत पर अवस्थित है । अगर कोई श्री जगन्नाथ जी का मंदिर के अंदर जा कर स्नानमंडप से नीचे की ओर देखेगा तो यह साफ देखा जाएगा कि सचमुच यह मंदिर एक पर्वत पर अवस्थित है । मुख्य मंदिर का निर्माण शैली अत्यंत मनमोहक और मूर्तिकला समृद्ध है । इसे बारहवीं की सदी में गंगवंश के महाराजा अनंतवर्मा चोडगंग देव ने निर्माण किया था जिसके अंदर प्रभु श्री जगन्नाथ जी अपने बड़े भैया बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ पूजे जा रहे हैं । कछ ही दूर पर अन्य एक मंदिर में उनकी पत्नी महालक्ष्मी देवी की पूजा की जा रही है । मुख्य मंदिर के आस-पास कई और मंदिर भी है जिनके अंदर क्षेत्रेश्वरी विमला माताजी, सरस्वती देवी तथा अन्य से जाना जाता है । चूंकि मुख्य मंदिर सब से बड़ा है इसे बड़देवल या श्रीमंदिर भी कहा जाता है ।

प्रभु श्री जगन्नाथ जी के लीला अपार है । वह ठीक आम आदमी के तरह सुबह उठते हैं, दर्शन देते हैं, भोजन करते हैं, विश्राम लेते हैं और पहर यानि दिवस के अंत में शयन भी करते हैं । उनके प्रसाद महाप्रसाद या अबढा के नाम से जगत प्रसिद्ध है । आम आदमी को जैसे बुखार होता उन को भी बुखार आता है । स्नान पूर्णमासी के दिन उनको स्नान कराया जाता है । उसके अगले दिन से 15 दिन तक उन्हें बुखार रहने के कारण अनवसर में रहते हैं और इन 15 दिन तक उनका जनसामान्य के लिए दर्शन बंद हो जाता है और मंदिर के गर्भगृह में उनका उपचार आयुर्वेदिक दवाई से की जाती है । 15 दिनों

के बाद हमें नवयौवन वेश में दिखाई देते है और दूसरे दिन ही घोषयात्रा या रथयात्रा पर निकलते हैं । इस रथयात्रा की विशेषता यह है कि अगर कोई उन्हें दर्शन के लिए कुछ असुविधावश मंदिर में नहीं जा सकता तो इसी दिन वह रथोपरि उन तीन ठाकुर को देख सकता है ।

श्री जगन्नाथ जी के मानवीय लीला देखने के काबिल है । भाई-बहन के साथ वह 10 दिनों कि रथयात्रा पर अपनी जन्मवेदी गुंडीचा मंदिर जो कि बडदेवल से 3 कि.मी. दूरी पर स्थित है - वहां चल जाते है । अपनी पत्नी महालक्ष्मी देवी को साथ नहीं ले जाते है । गुस्से में आ कर महालक्ष्मी देवी रथयात्रा के पांचवां दिन यानि हेरा पंचमी के दिन गुंडीचा मंदिर के पास जा कर श्री जगन्नाथ जी के रथ का कुछ अंश तोड़ देती है तथा बाहुडा यात्रा के बाद जब श्री जगन्नाथ जी बश्रदेवल को वापस आते हैं वह बड़देवल का दरवाजा बंद कर देती है । तब महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी के अकल-गुडुम हो जाता है और वह आम आदमी के तरह महालक्ष्मी देवी को दुलार-पुचकार कर और उन्हें रसगोला मिठाई खिलाकर उनका गुस्सा शांत करते हैं । हालांकि यह कथनी-करनी यानि बाचनिका श्रीमंदिर के पंडे-पुजारियों के द्वारा की जाती है, फिर भी यह प्रभु के मानवीय लीला को बखूबी से दर्शाता है ।

''वासांसि जिर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि,
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।''

श्रीमद भगवतगीता का उपर्युक्त श्लोक हर कोई जानता है । 12 या 16 वर्षों के अंतराल में होनेवाला श्रीजगन्नाथजी के नवकलेवर से यह साफ पता चलता है महाप्रभु श्रीजगन्नाथजी भी आम आदमी की तरह जन्म-मरण से अछूत नहीं है । नवकलेवर के दौरान वह अपना पुराना कलेवर यानि देह छोड़कर नया कलेवर में होते हैं । उनके सेवायत जंगल में घूम-घूम कर अतिविशिष्ट चिह्नवाला नीम के पेड़ यानि दारु का संधान करते हैं । उन दारुओं को भव्य शोभायात्रा में पुरी मंदिर में ला कर उन तीन ठाकुरों के मूर्तियों या प्रतिमाओं को तैयार किया जाता है और एक विशेष मुहूर्त में उनमें ब्रह्म प्रतिष्ठा कर के उनका नवकलेवर प्रक्रिया पूरी की जाती है । इसलिए प्रभुजी को दारुब्रह्म भी कहा जाता है ।

श्रीजगन्नाथजी के अलग-अलग उत्सवों पर अलग-अलग वेश यानि श्रृंगार किया जाता है । बडसिंहार वेश, गजानन वेश, हाथी वेश, नागार्जुन वेश के साथ जो वेश प्रमुख है वह है सोनावेश । इसे बडचढाऊ वेश भी कहते है । रथयात्रा के एकादशवां के दिन इस वेश में तीन ठाकुरों के दर्शन देते है । इसदिन शाम को मोटे-मोटे सोने से तैयार अलंकार जैसे कि हाथों में श्रीभूज, पैरों में श्रीपयर, सर पर सोने की बड़ा सा मुकुट आदि से सुसज्जित हो कर जनसाधारण को दर्शन देते हैं, जिसे देखना सौभाग्य माना जाता है । पुरी के दिवंगत महराजा कपिलेंद्रदेव ने कांची के महाराज को युद्ध में हराकर इन सोने की अलंकार ले आये थे और प्रभु श्रीजगन्नाथजी सेवा के लिए श्रीमंदिर ट्रस्ट को प्रदान कर गये थे ।

पुरीधाम चारधामों में से एक प्रमुख धाम है । प्रभु श्रीजगन्नाथजी के दर्शन और आशीर्वाद पाने के लिए देश के कोने-कोने से हर कोई आदमी पुरीधाम आता है । सचमुच प्रभु श्रीजगन्नाथजी हिंदू जाति के मथामणि हैं ।

नुआखाई उत्सव

श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक

नुआखाई ओडिशा का प्रमुख लोक-पर्व है। पश्चिमी ओडिशा का कृषि त्यौहार नुआखाई जुहर उत्साह और परंपरा के साथ मनाया जाता है। यह गणेश चतुर्थी के उत्सव के एक दिन के बाद मनाया जाता है। नुआखाई एक फसल उत्सव है जो पश्चिमी ओडिशा और दक्षिणी छत्तीसगढ़सहित सीमावर्त्ती छत्तीसगढ़के लोगों द्वारा मौसम के नए चावल के स्वागत में मनाया जाता है। छत्तीसगढ़, गरियाबंद, महासमुन्द, रायगढ़, जशपुर, धमतरी सहित बस्तर के कुछ जिले भी इनमें शामिल हैं, जहाँ पड़ोसी राज्य की तरह उत्कल संस्कृति से जुड़े लाखों लोग इसे पारम्परिक रीति-रिवाजों के साथ उत्साह से मनाते हैं। नुआखाई भारत में मुख्य रूप से पश्चिमी ओडिशा और दक्षिणी छत्तीसगढ़के लोगों द्वारा मनाया जाने वाला एक कृषि त्यौहार है। नुआखाई को मौसम के नए चावल के स्वागत के लिए मनाया जाता है।

ओडिशा में नुआखाई का इतिहास बहुत पुराना है और वैदिक काल से जुड़ा हुआ है। जनश्रुतियों के अनुसार पश्चिम ओडिशा में नुआखाई की परम्परा शुरु हुई। स्वतंत्र राज्य के निर्माण के अपने प्रयासों में, राजा रमई देव ने कृषि के महत्व को महसूस किया क्योंकि लोगों के जीवन यापन हेतु अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से भोजन एकत्र करने पर आधारित थी। यह महसूस किया गया कि अर्थव्यवस्था का यह रूप राज्य के लिए आवश्वक अधिशेष उत्पन्न नहीं कर सकता है। संबलपुरी क्षेत्र में राज्य के गठन के दौरान, नुआखाई ने एक अनुष्ठान उत्सव के रूप में कृषि को जीवन शैली के रूप में बढ़ावा देने में एक प्रमुख भूमिका निभायी। इस प्रकार नुआखाई को संबलपुरी संस्कृति और विरासत का प्रतीक बनाने का श्रेय राजा रमई देव को दिया जाता है। उन्होंने आम लोगों के जीवन में स्थायित्व लाने के लिए उन्हें स्थायी खेती के लिए प्रोत्साहित करने की सोची और इसके लिए नुआखाई पर्व मनाने की शुरूआत की। कालान्तर में यह पश्चिम ओडिशा के लोकजीवन का एक प्रमुख पर्व बन गया।

नुआ का अर्थ है नया और खाई का अर्थ है भोजन। नुआखाई का

त्यौहार किसानों द्वारा नए कटे हुए भोजन का जश्न मनाने का त्यौहार है। नुआखाई भाद्रपद शुक्ल पंचमी के दिन मनाया जाता है। 'नुआखाई' का शाब्दिक अर्थ है 'नया खाना'। खेतों में खड़ी नई फसल के स्वागत में यह मुख्य रूप से ओडिशा के किसानों और खेतिहर श्रमिकों द्वारा मनाया जाने वाला पारम्परिक त्यौहार है, लेकिन समाज के सभी वर्ग इसे उत्साह के साथ मनाते हैं। लोग 'नुआखाई जुहार' और 'भेंटघाट' के लिए एक-दूसरे के घर आते-जाते हैं। वर्षा ऋतु के दौरान भाद्र माह के शुक्ल पक्ष में खेतों में धान की नई फसल, विशेष रूप से जल्दी पकने वाले धान में बालियों आने लगती हैं। तब नई फसल के स्वागत में नुआखाई उत्सव का आयोजन किया जाता है। यह कृषि संस्कृति और ऋषि संस्कृति पर आधारित त्यौहार है। नुआखाई उत्सव में नौ रंगों की रस्में हैं। पश्चिमी ओडिशा क्षेत्र के लोग इस आयोजन की तैयारी 15 दिन पहले से शुरू कर देते हैं। उत्सव के दिन की प्रस्तावना के रूप में नौ अनुष्ठानों का पालन किया जाता है। इन नौ रंगों में बेहरेन (तारीख तय करने के लिए बैठक की घोषणा), लगन देखा (नए चावल पकाने का सही तारीख तय करना), डाका हाका (निमंत्रण), साफ सुथरा और लिपा पुछा (स्वच्छता), घिना बीका (खरीद), नुआ धन खुजा (नई फसल की तलाश में), बाली पाका (देवता को प्रसाद लेकर नुआखाई के लिए अंतिम संकल्प), नुआखाई (नई फसल को प्रसाद के रूप में देवता को अर्पित करने के बाद, नृत्य और गायन के बाद), जुहर भेंट (बड़ों का सम्मान और उपहार हस्तांतरण) सम्मिलित हैं। जब गांव के बुजुर्ग एक पवित्र स्थान पर एक साथ बैठते हैं, तब बेरेन गांव वालों को तुरही बजाकर बुलाते हैं। नुआखाई को सामुदायिक और घरेलू दोनों स्तरों पर मनाया जाता है। नुआ लेने के बाद परिवार के सभी कनिष्ठ सदस्य अपने बड़ों को प्रणाम करते हैं। इसके बाद नुआखाई जुहर होता है, जिसके दौरान मित्रों, शुभचिंतकों और रिश्तेदारों के साथ अभिवादन का आदान-प्रदान किया जाता है। यह उत्सव एकता का प्रतीक है। यह लोगों के लिए अपने मतभेदों को दूर करने और रिश्तों को फिर से शुरू करने का अवसर प्रदान करता है। शाम को लोग एक-दूसरे से मिलते हैं, बधाई का आदान-प्रदान करते हैं। सारे मतभेद दूर हो जाते हैं और बड़ों को नुआखाई जुहर की शुभकामनाएं दी जाती हैं। बुजुर्ग अपने कनिष्ठों को आशीर्वाद देते हैं और उनके लंबे जीवन, सुख और समृद्धि की कामना करते हैं। शाम के समय, लोक नृत्य और गीतों का आयोजन 'नुआखाई भेंटघाट' कहा जाता है। लोग रसरकेली, दलखाई, मैलाजादा, छुटकुचुता, सजनी, नचनिया और बजनिया जैसे पारंपरिक संबलपुरी नृत्य रूपों पर आनंद के साथ नृत्य करते हैं। नुआखाई के एक दिन पहले नये धान की बालियों के साथ चुड़ा (चिवड़ा), मूंग और परसा पत्तों पूजा के फूल खरीद लिये जाते हैं।

नये धान के चावल को पकाकर तरह-तरह के पारम्परिक व्यंजनों के साथ घरों एवं सामूहिक रूप से 'नवान्हभोज' (नवान्नभोज) अर्थात नये अन्न का भोज बड़े प्रेम से किया जाता है। इस दिन के लिए 'अरसा पीठा' व्यंजन विशेष रूप से तैयार किया जाता है। नुआखाई त्यौहार के आगमन के पूर्व लोग अपने-अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं। परिवार के सदस्यों के लिए नये कपड़े खरीदे जाते हैं। लोग एक-दूसरे के परिवारों को नवान्ह भोज के आयोजन में स्नेहपूर्वक आमंत्रित करते हैं। लोग एक दूसरे को नुआखाई जुहार करने आते-जाते हैं। गाँवों से लेकर शहरों तक खूब रौनक रहती है। सार्वजनिक आयोजनों में पश्चिम ओडिशा की लोक संस्कृति पर आधारित पारम्परिक लोक नृत्यों की धूम रहती है।

परोपकारी उत्कलमणि

श्रीमती कमला नायक
से.नि. वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

पैदा हुए थे आप क्या साधारण सा
परिवार, माता, पिता सब थे साधारण सा ।
गांव, जिला, राज्य भी साधारण सा
लेकिन प्रतिभा दर्शाए आप असाधारण सा ।

कैशर- यौवन बिताए आप सेवा और त्याग में,
दु:खी, रोगी, भूखा, कोई न लौटता निराश में
जनता के उन्नति शिक्षा और स्वास्थ्य की उन्नति,
लक्ष्य था आपकी सभी उच्चकोटि की
स्वार्थ - त्याग, खुशी - त्याग, भोग के त्याग में थे माहिर
कष्ट, दु:ख, दर्द बांट कर पाते थे आप आत्म तृप्ति
बाढ़, वात्या, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक आपदा
डरा न सका आपके कर्तव्य से हटा के ।

और परिवार बिना, पुत्र था आपका पीड़ित
उसे भूलकर आप मोल लिए संकट
गरीब के बंधु होकर बुलवाए गोपबंधु
पार्टी के संभालकर हो गय मुख्य प्रबंधक
सत्यवादी विद्यालय स्थापन कराये
पंचसखा के बीच नाम लिखाए
समाज पत्रिका की संपादक बन गए,
धर्मपद, चिलिका, कराकविता की सृष्टा हो गये
गांधी मन्त्र के बन गये पुजारी
राज्यवासी धुन लिए आपको प्रहरी
मउडमणि बुलाए आप राज्य उत्कल की
राज्य वासी, देश वासी सब करते है प्रणति

परोपकार, देश प्रेम और राजनैतिक चेतना
जागृत करके पूरा करते थे मनोकामना
सुभाष बोस बुलाते थे आपकी 'गांधी ओडिशा' की
बन गये उदाहरण आप उडिशा वासी की ।

प्रणति हमारे है आपके चरणपर
युग युग जीते रहे आप समाज की आत्मा पर
लोगो को मिले आप जैसा गोपबंधु
जिसलिए आप कहलाते थे उत्कल की दीनबंधु ।
राज्यवासी धुन लिए आपको प्रहरी
मउडमणि बुलाए आप राज्य उत्कल की
राज्य वासी, देश वासी सब करते है प्रणति

परोपकार, देश प्रेम और राजनैतिक चेतना
जागृत करके पूरा करते थे मनोकामना
सुभाष बोस बुलाते थे आपकी 'गांधी ओडिशा' की
बन गये उदाहरण आप उडिशा वासी की ।

प्रणति हमारे है आपके चरणपर
युग युग जीते रहे आप समाज की आत्मा पर
लोगो को मिले आप जैसा गोपबंधु
जिसलिए आप कहलाते थे उत्कल की दीनबंधु ।

शक्ति उपासना में प्रसिद्ध

श्रीमती रूपाली
पत्नी- श्री रोहित कुमार
कार्यालय :के. रा. लेप.

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम: ।

शक्ति उपासना में प्रसिद्ध :-

ओडिशा का 64 योगिनी मंदिर जो महामाया मंदिर के नाम से भी प्रसिद्ध है, भौम वंश की साम्राज्ञी हीरा देवी के द्वारा स्थापित किया गया था । साम्राज्ञी हीरा देवी के नाम पर ही हीरापुर गांव का नाम रखा गया था ।

हीरापुर गांव का चौसठ योगिनी मंदिर भुवनेश्वर शहर से 20 किलोमीटर दूर हीरापुर गांव में स्थित है । यह मंदिर पूरी तरह प्राकृतिक वातावरण में धान के खेतों के मध्य स्थित है ।

चौसठ योगिनी मंदिर / महामाया मंदिर का इतिहास:-

चौसठ योगिनी मंदिर की अधिकारिक खोज श्री केदारनाथ महापात्रा ने थी जो कि ओडिशा राज्य संग्रहालय में कार्यरत थे उस समय से यह मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अंतर्गत आता है । पुरी एवं कोणार्क मंदिर के विध्वंसक के रूप में कुख्यात धर्म परिवर्तित मुसलमान सेनाध्यक्ष काला पहाड़ में चौसठ योगिनी मंदिर पर भी आक्रमण किया एवं यहां की मूर्तियों को छिन्न-भिन्न एवं खंडित किया था ।

चौसठ योगिनी मंदिर शक्ति उपासना एवं तांत्रिक क्रियाओं का बहुत बड़ा केंद्र है यहां उपासक अपने मनोकामना पूर्ति के लिए योगिनीयों की उपासना करते है । यह योगिनीयां देवी या यक्षिणी होती है । प्रत्येक योगिनी का अलग-अलग नाम एवं शक्ति होती है इसलिए भक्तगण अपने मनोकामना से संबंधित योगिनी की आराधना करते हैं । इस मनोकामना में शत्रु नाश, संतान प्राप्ति एवं अन्य इच्छाएं सम्मिलित हैं ।

तांत्रिक क्रियाओं को बहुत ही गोपनीयता के साथ किया जाता है एवं इसमें देवी की उपासना मां चंडी के पाठ एवं देवी महात्म्य की आराधना से ज्यादातर दशहरा के पुण्य अवसर पर किया जाता है । माना जाता है कि तांत्रिक क्रियाओं को करने के लिए दशहरा सबसे उत्तम माना जाता है क्योंकि इस समय सभी तांत्रिक शक्तियां सक्रिय रहती है।

चौसठ योगिनी मंदिर का वास्तुशिल्प : -

यह मंदिर गोलाकार छोटा मंदिर है । जिसका निर्माण स्थानीय बलुआ पत्थर से किया गया है एवं मूर्तियों के निर्माण में काली ग्रेनाइट पत्थर का प्रयोग किया गया है यह अपने आप में एक अलग वास्तुकला को प्रदर्शित करती है । यहां इन योगिनियों के चक्र के आकार में प्रदर्शित किया गया है । प्रत्येक योगिनी इस चक्र के एक अंत पर स्थित है ।

मंदिर के आगे में पूरब की ओर पीठिका है जो कि सूर्य पीठ के रूप में प्रसिद्ध है । यहां पर भक्त सूर्य की आराधाना करते हैं। इस मंदिर का प्रवेश द्वार सकरा है परंतु अंदर जाने पर एक गोल आंगन जैसा कक्ष है । यहां सुव्यवस्थित पंक्ति एवं गोलाकार व्यवस्था में दीवार से लगी हुई 60 यक्षिणियों की मूर्तियां हैं, जिनकी मुद्राएँ भाव एवं आसन अलग-अलग है। कालापहाड़ के आक्रमण के कारण कुछ मूर्तियां खंडित भी हैं । गोलाकार आंगन के बीचो बीच में एक चबूतरा हैं, जिसे चंडी पीठ के नाम से जाना जाता है इस पर बाकी की 4 योगिनीयां स्थित है इसमें से 1

योगिनी की मूर्ति अब गायब है ।

क्योंकि देवी मंदिर में भैरव की उपस्थिति आवश्यक रहती है इसलिए यहां 4 भैरव की भी मूर्ति है ।

योगिनी महामाया के सामने ही पूजा अर्चना की जाती है । ये पूरी तरह से अन्य मंदिरों की देवी माँ की मूर्तियां की तरह अलंकृत है जो कि मानव खोपड़ी के आसन पर विराजमान है । जिनके सामने में एक दीपक अनंत काल से प्रज्ज्वलित है ।

इस मंदिर के बाहर प्रवेश द्वार के पास ही उजले रंग का शिव मंदिर भी है, जिसे संकेश्वर मंदिर कहा जाता है । मंदिर के बाहर एक छोटा सा जलकुंड भी है जिसके बीच में एक छोटा मंदिर विराजमान है । हर साल दिसंबर महीने में चौसठ योगिनी महोत्सव का आयोजन बहुत ही धूमधाम से किया जाता है जिसमें मंदिर के बाहर ओडिशा के लोक नृत्य एवं संगीत का प्रदर्शन बहुत ही सुंदरता से किया जाता है ।

यह मंदिर ओडिशा के गौरवशाली वैभव एवं मंदिर परंपरा के सर्वोत्तम प्रतीकों में से एक है । यहां बरसात एवं गर्मी के मौसम को छोड़कर कभी भी जाया जा सकता है। नवरात्रि एवं चौसठ योगिनी महोत्सव इस मंदिर में दर्शन करने जाने का सर्वोत्तम समय है ।

रेत - कला के भारतीय जादूगर- सुदर्शन पटनायक : ओडिशा की शान

श्री अशोक कुमार पंडा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हम सभी प्राय: वर्तमान के प्रचलित सूचनाओं के माध्यमों जैसे टेलीविजन, अखबारों, सोशल मीडिया के द्वारा सभी उत्सवों एवं सामाजिक मुद्दों को रेत पर बनी कलाकृतियों के माध्यम से देखते हैं। ये कलाकृतियां हमें प्रेरित भी करती हैं और साथ ही साथ जागरूक भी करती हैं। इन कलाकृतियों को तैयार करने का श्रेय में ओडिशा के सुप्रसिद्ध रेत-कलाकार सुदर्शन पटनायक जी को जाता है।

ओडिशा के सुदर्शन पटनायक जी भारत के सर्वश्रेष्ठ रेत-कलाकार है। उनकी रेत से बनी चित्रकारी पूरी दुनिया में मशहूर है। वे समुद्र के किनारे पड़ी रेत (बालू) से ऐसी कलाकृतियां बना देते हैं कि लोग आश्चर्यचकित होकर प्रशंसा करते है।

उनका जन्म 15 अप्रैल 1977 को ओडिशा के शहर पुरी में हुआ था। बचपन में उनके मित्र पेन और पेन्सिल का प्रयोग करते हुए चित्रकला करते थे, तब सुदर्शन पुरी के कोशिश करते थे। सुदर्शन पटनायक जी का जीवन बहुत ही संघर्षपूर्ण रहा है। आर्थिक समस्या के कारण वे उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। बचपन से ही वे एक बड़ा चित्रकार बनना चाहते थे लेकिन गरीबी के कारण चित्रकला में प्रयोग की जाने वाली सामग्रियों को खरीदना मुश्किल था। यही कारण था की वो समुद्रतट पर अपनी चित्रकला का कौशल निखारते थे।

सुदर्शन पटनायक जी की कला की देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में सराहना होती है। वर्ष 2015 में पहली बार रेत चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए सुदर्शन को अमेरिका से निमंत्रण आया था, लेकिन वे वहाँ जा नहीं पाये। बहुत अच्छा मौका हाथ से निकल गया मगर सुदर्शन जी ने हार नहीं मानी। वे अपनी कला को और निखारते रहे, धीरे धीरे दूसरे देशों से भी उन्हें रेत पर चित्रकला के लिए निमंत्रण आने लगा। विदेश में सुदर्शन जी 50 से भी अधिक पुरस्कारों से सम्मानित किए जा चुके हैं।

मिल चुके हैं। उनको कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2014 में पद्मश्री से सम्मानित किया। सुदर्शन जी कई बार लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में जगह बना चुके हैं। वर्ष 2012 में ओडिशा की बरहामपुर विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई । वर्ष 2012 में नासिक के कुसुमाग्रज विश्वविद्यालय द्वारा गोदावरी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त इन्हें पूर्व और पहली महिला राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा ओडिशा के पुरी के समुद्रतट पर सम्मानित किया गया। वर्ष 2010 में सी.एन.एन द्वारा यंग इंडियन लीडरशिप अवार्ड लिम्का बुक के 20वे संस्करण के अवसर पर पीपल ऑफ द ईयर 2009, वर्ष 2008 में ओडिशा राज्य सरकार द्वारा सरला पुरस्कार, भारत पर्यटन विभाग द्वारा वर्ष 2005-06 में राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार, वर्ष 2006 में श्रीलंका मानवाधिकार संस्था से महामहिम पुरस्कार 2006, वर्ष 2004-05 में भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय से पटना में राष्ट्रीय युवा पुरस्कार, वर्ष 2001 में कोलकाता में भारत ज्योति पुरस्कार, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा भुवनेश्वर सर्किल में उत्कृष्टता का पुरस्कार, वर्ष 2014 में अटलांटिक सिटी में रेत मूर्तिकला विश्व कप में पीपुल्स च्वाइस अवार्ड से सम्मानित किया गया।

सुदर्शन पटनायक जी द्वारा कई विशेष कार्य किये जा रहे हैं। वे पुरी (ओडिशा) में रेत कला संस्थान में कलाकारों को प्रशिक्षित कर रहे हैं। वे रेत चित्रकारी से जुड़ी एक किताब भी प्रकाशित कर चुके हैं। देश-विदेश में होने वाली रेत कला के लिए कार्यशाला भी आयोजित करते हैं। पुरी समुद्रीतट पर वर्ष 2006, 2007, 2008, 2009 2010 में वर्ल्ड रिकॉर्ड बना चुके हैं। वर्ष 2010 कॉमनवेल्थ खेल के उद्घाटन समारोह में रेत एनिमेशन शो किया था। वे ओडिशा ललित कला अकादमी से भी जुड़े हैं।

सुदर्शन पटनायक जी रेत-कला के माध्यम से दुनिया में शांति के को बढ़ावा देने के लिए अपनी कला का इस्तेमाल कर रहे हैं जो अत्यंत प्रशंसनीय है। ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद, गंभीर बीमारियां, धूम्रपान जैसे मुद्दों पर भी वे जागरूकता फैलाने की कोशिश में जुटे रहे हैं। वे ओडिशा अंतरराष्ट्रीय रेत-कला उत्सव के ब्रांड एम्बेसेडर भी हैं।

ओडिसी नृत्य

श्री सरोज बारिक
सहायक पर्यवेक्षक

ओडिसी नृत्य की उत्पत्ति पूर्वी भारत, के ओडिशा में हुई है । अपने शुरुआती रूप में इसे महरिस अथवा मंदिरों की महिला सेविकाओं द्वारा मंदिर के सेवा कार्यों के रूप में प्रस्तुत किया जाता था । इस पारंपरिक नृत्य को बीसवीं शताब्दी के मध्य में थिएटर कला के रूप में नया स्वरूप प्रदान किया गया जिसका संदर्भ केवल वर्तमान नृत्य रूप तक सीमित नहीं बल्कि ओडिशा के मध्यकालीन मूर्तिकला, चित्रकला और साहित्य में भी था। अपने नए स्वरूप में ओडिसी नृत्य, देश भर में तेजी से प्रचलित हुआ । ओडिशा का वैष्णव मत ओडिसी नृत्य का अन्तर्भूत तत्व है । कृष्ण और राधा की कथा इसको विषय-वस्तु प्रदान करती है ।

इस नृत्य का जन्म, बुद्धकालीन सहजयान और वज्रयान शाखाओं की साधना से हुआ । विभिन्न तरह की भाव - भंगिमाओं के साथ यह नृत्य भगवान को समर्पित है । इस नृत्य का प्रधान भाग लास्य और अल्प भाग तांडव से जुडा हुआ है । इंद्रीय और गायन के रूप में ओडीसी प्रेम और भाव, देवताओं और मानव से जुडा, सांसारिक और लोकोत्तर नृत्य है । नाट्य शास्त्र में भी अनेक प्रादेशिक विशेषताओं का उल्लेख किया गया है । दक्षिण-पूर्वी शैली उधरा मगध शैली के रूप में जाती है, जिसमें वर्तमान ओडीसी को प्राचीन अग्रदूत के रूप में पहचाना जा सकता है । ओडीसी गुप्त रूप से नाट्यशास्त्र द्वारा स्थापित सिद्धांतों का अनुसरण करता है । चेहरे के भाव, हस्त-मुद्राएं और शरीर की गतिविधियों का उपयोग एक निश्चित अनुभूति, एक भावना या नवरसों में से किसी एक के संकेत के लिए किया जाता है ।

गतिविधि तकनीकियां दो आधारभूत मुद्राओं-चौक और त्रिभंग के आस-पास निर्मित होती हैं । चौक एक वर्ग (चौकोर) की स्थिति है । यह शरीर के भार के समान संतुलन के साथ एक पुरुषोचित मुद्रा है । त्रिभंग एक बहुत स्त्रीयोचित मुद्रा है, जिसमें शरीर गले, धड और घुटने पर मुडा होता है । धड संचालन ओडीसी शैली का एक बहुत महत्वपूर्ण और एक विशिष्ट लक्षण है । इसमें शरीर का निचला हिस्सा शैली का एक बहुत महत्वपूर्ण और एक विशिष्ट लक्षण है । इसमें शरीर का निचला हिस्सा स्थिर रहता है और शरीर के ऊपरी हिस्से के केन्द्र द्वारा धड धुरी के समानान्तर एक ओर से दूसरी ओर गति करता है । इसके संतुलन के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है इसलिए कंधों या नितम्बों की किसी गतिविधि से बचा जाता है । यहाँ समतल पांव, पदांगुली या ऐडी के मेल के साथ निश्चित पद-संचालन हैं । यह जटिल संयोजनों की एक विविधता में उपयोग की जाती है । यहाँ पैरों की गतिविधियों की बहुसंख्यक संभावनाएं भी हैं । अधिकतर पैरों की गतिविधियां धरती पर या अंतराल में पेचदार या वृत्ताकार होती है ।

पैरों की गतिविधियों के अतिरिक्त यहाँ छलांग या चक्कर के लिए चाल की एक विविधता है और निश्चित मुद्राएं मूर्तिकला द्वारा प्रेरित हैं । इन्हें भंगी कहा जाता है, यह एक निश्चित मुद्रा में गतिविधि की समाप्ति के वास्ताविक संयोग है ।

हस्तमुद्राएं नृत्त एवं नृत्य दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है । नृत्त में इनका उपयोग सम्प्रेषण में किया जाता है । ओडीसी का नियमानिष्ठ रंगपटल प्रस्तुतीकरण का एक निश्चित क्रम है, जहाँ 'रास' की कल्पना की रचना के लिए प्रत्येक क्रमिक एकक का निर्माण साथ ही साथ व्यवस्थित रूप से किया जाता है ।

मंगलाचरण आरम्भिक एकक है, जहाँ नर्तकी हाथों में फूल लिए धीरे-धीरे मंच पर प्रवेश करती है और धरती माता को अर्पित करती है। इसके बाद नर्तकी अपने इष्टदेव को प्रणाम करती है। आमतौर पर मांगलिक शुभारम्भ के लिए गणेश का आह्वान किया जाता है। एक नृत्य क्रम के साथ एकक का अन्त इष्टदेव, गुरु और दर्शकों के अभिवादन के साथ होता है। अगले एकक को बटु कहा जाता है, जहाँ चौक और त्रिभंग की आधारभूत भंगिमा द्वारा पुरुषोचित और स्त्रीयोचित द्वायात्मकता में से ओडीसी नृत्त तकनीक के मूल विचार को प्रकाश में लाया जाता है। इसके साथ बजाया जाने वाला संगीत बहुत सरल है - नृत्य पाठ्यक्रम का सिर्फ एक स्थायी है। बटु में नृत्त की बहुत आधारभूत व्याख्या के बाद पल्लवी में गतिविधियों और संगीत के साज-सामान तथा पुष्प की बारी आती है। एक निश्चित राग में एक संगीतात्मक संयोजन का दृश्यात्मक प्रदर्शन नर्तकी द्वारा मध्यम और यथोचित गतिविधियों के साथ किया जाता है। ओडिशा में जयदेव द्वारा रचित बारहवीं सदी के गीत-गोविन्द के अष्टपदों के नृत्य की सतत् परम्परा है। इस कविता का प्रगीत्व (लयात्मकता) विशेषत: ओडीसी शैली के लिए उपयुक्त है। गीत गोविन्द के अतिरिक्त उपेन्द्र भंज, बालदेव रथ, बनमाली और गोपाल कृष्ण जैसे अन्य ओडीसी कवियों की रचनाओं का भी उपयोग किया जाता है।

रंगपटल का आखिरी एकक, जो शायद एक से ज्यादा पल्लवी और अभिनय पर आधारित एककों का सम्मिश्रण है, को मोक्ष कहा जाता है। पखावज पर अक्षरों का वर्णन होता है और नर्तकी धीरे-धीरे घूमती हुई, तीव्रता से चरमोत्कर्ष पर पहुंचती है। तब नर्तकी आखिरी प्रणाम करती है।

ओडीसी वादक मण्डल में मूलत: एक पखावज वादक (जो कि आमतौर पर स्वयं गुरु होता है), एक गायक, एक बांसरी वादक, एक सितार या वीणा वादक और एक मंजीरा वादक होता है।

गुरु केलुचरण महापात्र ने इस नृत्य को नया रूप दिया था। यह नृत्य अत्यंत पुराने नृत्यों में से एक है। इस नृत्य की शुरुआत देवदासियों (महरिस) के नृत्य के साथ हुआ था। देवदासी जो मंदिरों में नृत्य किया करती थी। इस नृत्य के बारे में कार्य करने लगी और ओडिसी नृत्य का प्रचलन कम होने लगा। फिर इसी बीच पुरुषों ने मंदिरों में नृत्य करना शुरु कर दिया। पुरुषों के नृत्य समूह को गोटुपुआ कहा जाता था।

इस नृत्य का अस्तित्व ओडिसा के हिन्दू मंदिरों की मूर्तियों, हिन्दू, जैन, और बौद्ध धर्म के पुरातात्विक स्थलों में नृत्य मुद्राओं को देखने से पता चलता है। इस्लामिक शासन काल के समय यह नृत्य कला कम होने लगी थी और ब्रिटिश शासन काल में इसे बंद करवा दिया गया था। कुछ समय बाद भारतीयों ने इसका विरोध किया और फिर इसका पुनर्निर्माण और पुनर्विस्तार हुआ। भुवनेश्वर के पास ही उदयगिरि और खंडगिरी की गुफाओं में इस नृत्य के प्रमाण देखने को मिलते हैं।

ओडिसी नृत्य की नाट्य - मंडली में आम तौर पर एक पखावज वादक, एक बांसुरी वादक, एक गायक, एक सितार या वीणा वादक, एक मंजीरा वादक और नर्तक होते हैं। नर्तकी विशेष तरह के आभूषणों को धारण करती है जो चांदी के बने होते हैं।

केश-सज्जा पर विशेष ध्यान दिया जाता है जो कि बहुत आकर्षक होती है। बडे आकार का जुड़ा बनाया जाता है जिसको पुष्पों और आभूषणों से सजाया जाता है। माथे पर चांदी का टीका लगाया जाता है। सामने की तरफ से प्लीट्स बना कर इस साड़ी को पहना जाता है। इसमें ओडिशा के पारम्परिक प्रिंट होते हैं। हाथों और पैरों में आलता लगाया जाता है।

ओडिसी नृत्य वास्तव में एक अद्भुत नृत्य है जो आज भी अपनी कला को संजोय रखे हुए है। नर्तकी नृत्य के माध्यम से देवदासियों या महरिस की ईश्वर के प्रति भक्ति में विश्वास रखते हुए मोक्ष पाने की कामना करती है।

कलिंग युद्ध: एक ऐसा भयानक युद्ध जिसके बाद सम्राट अशोक ने अपनाया था अहिंसा का मार्ग

श्रीमती स्वर्णा स्वरूपा पात्रा
पत्नी : श्री अमित कुमार प्रधान
वरि. लेखापरीक्षक

भारतीय इतिहास में सबसे चर्चित युद्धों में से एक, कलिंग युद्ध (Kalinga War) मौर्य साम्राज्य के सम्राट अशोक और वर्तमान में ओडिशा के पास स्थित कलिंग राज्य के बीच लड़ा गया था । 'महासागर का स्वामी' कहा जाने वाला कलिंग एक समृद्ध राष्ट्र था जिसमें प्रतिभाशाली कलाकारों और शांतिपूर्ण लोग निवास करते थे । 321 ईसा पूर्व तक, यह नंद साम्राज्य द्वारा शासित था । व्यापार के लिए महत्वपूर्ण बंदरगाहों और एक मजबूत नौसेना के साथ कलिंग ने अपनी कोस्टलाइन को नियंत्रित किया और व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । राजगद्दी पाने के बाद केवल कलिंग युद्ध ही अशोक का एकमात्र युद्ध था । उसने प्राचीन भारत में मौर्य राजा बिंदुसार के साथ शुरु हुए साम्राज्य-निर्माण और सैन्य विजय का अंत किया ।

कलिंग युद्ध के कारण

भारतीय इतिहास के सबसे घातक युद्ध यानी कलिंग युद्ध के कारणों को लेकर इतिहासकारों के अलग-अलग विचार हैं । सम्राट अशोक अपने पिता बिंदुसार और दादा चंद्रगुप्त मौर्य के रास्ते पर चलना चाहता था । नंदों का शासनकाल के दौरान, कलिंग मगध साम्राज्य का एक प्रांत था । लेकिन चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा नंदों की हार के बाद कलिंग एक स्वतंत्र राज्य बन गया । जबकि चंद्रगुप्त मौर्य और बिंदुसार ने इसे फिर से जीतने का प्रयास किया लेकिन वे असफल रहे । केवल ये अशोक ही था जिसने सिंहासन को पुन: प्राप्त करने का कार्य किया ।

चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल के बाद से, कलिंग अपनी सैन्य शक्ति, सीलोन और जावा जैसे क्षेत्रों के साथ व्यापार संबंधों के लिए प्रसिद्ध था । कलिंग के समृद्धि के इन्हीं कारणों से अशोक कलिंग पर विजय प्राप्त करने और अपने राज्य का विस्तार करने के लिए प्रेरित हुआ । अशोक के शासनकाल के 12वें वर्ष में, उसने कलिंग के शसक को एक संदेश भेजा, जिसमें अनुरोध किया गया था कि उसका साम्राज्य मौर्यों को सौंप दिया जाए ।

हालांकि, कलिंग के शासक ने मौर्य साम्राज्य के सामने झुकने से इनकार कर दिया जिसका परिणाम यह निकला कि 261 ईसा पूर्व में, अशोक और कलिंग राज्य के बीच एक घातक युद्ध लड़ा गया था । इस युद्ध में कलिंग के लोगों ने मौर्य सेना के खिलाफ एक बहादुर लडाई लड़ी । देखते ही देखते समृद्ध कलिंग युद्ध के मैदान में तब्दील हो गया । कलिंग के शासक, कलिंगराज ने मगध साम्राज्य को हराने में कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन अशोक की विशाल सेना ने कलिंग की सेना को पछाड़ दिया । माना जाता है कि कलिंग के सैनिक अंतिम सांस तक डटे रहे और जीत के करीब थे । हालांकि, अशोक और उसके लोगों ने उनपर काबू पा लिया और युद्ध में विजयी हुए ।

कलिंग युद्ध के परिणाम

इतिहास के इस भयावह युद्ध में अशोक की जीत तो हुई पर बड़े पैमाने पर जानमाल का नुकसान भी हुआ । युद्ध में 1,00,000 सैनिक मारे गए और कलिंग के 1,50,000 सैनिकों को राजा अशोक ने पकड़ लिया, जिनकी बाद में मृत्यु हो गई । अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त किया और कलिंग को मगध साम्राज्य का पांचवां प्रांत बना लिया । कलिंग युद्ध दुनिया का एकमात्र युद्ध था, जहां विजेता ने अपनी तलवार छोड़ दी और कभी युद्ध ना करने का फैसला लिया । अशोक ने बौद्ध

धर्म अपनाने का फैसला किया और भारत और पड़ोसी देशों में बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए एक मिशन शुरु किया ।

भारतीय इतिहास में कलिंग युद्ध का महत्व

युद्ध में विजयी होने के बाद भी महान अशोक असंतुष्ट और निराश थे । कलिंग की बिगड़ती हालत, खून, तड़प और लोगों को आंसुओं से लथपथ देखकर वह दु:ख और निराशा से भर गया । सम्राट ने हिमालय से सीलोन और ग्रीस से बर्मा तक बौद्ध धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । युद्ध के बाद अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया । अशोक ने खुद से वादा किया कि वह कभी भी हिंसा के रास्ते पर नहीं चलेगा । अपने साम्राज्य के विस्तार को समाप्त कर दिया और इन्हीं कारणों से कलिंग युद्ध अशोक का गद्दी संभालने के बाद प्रथम और अंतिम युद्ध बना ।

पावन उत्कल

श्री सतीश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय : महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2)

उत्कल की पावन धरती से भारत देश को जाना है
भारतीय संस्कृति को संजोय इसका इतिहास पुराना है ।
स्वभाव में बस्ती है शांति, हिंसा का नहीं ठिकाना है
भाई चारा, सौहार्द्र प्रेम यहां कण कण में समाया है ।
वीर सुभाष की जन्मभूमि है, कई वीरों की जननी है
आओ हमें इस देश की खातिर उत्कल की सेवा करनी है ।
जगन्नाथ विराजमान जहां पर, लिंगराज की छत्रछाया है,
कदम रखते ही इस भूमि पर, सब पापों से मुक्त पाया है ।
उत्कल की यह भूमि, सच में कितनी पावन है
स्वर्ग है यह भूमि, जिसका भगवान ने भी थामा दामन है ।
एक तरफ सगर की दहाड़, पर्वत और पठार है
दूसरी तरफ हरियाली, जंगल और बहार है ।
जहां दिन की शुरुआत होती है, प्रभु के जयकारों
ऐसी पावन है यह भूमि, लोगों के संस्कारों से ।
सुंदर यह धरती है प्यारी, स्वच्छता का बसेरा है,
सूरज की प्यारी किरणों से, होता यहां सवेरा है ।
भारतीयता की झलक अनेकता में एकता यहां पाया है,
भारत का इतिहास, उत्कल के दिलों में समाया है ।
ऊपजाऊ भूमि, खनिज संपदाओं का भंडार, चीलका और
हीराकुंड इसकी शान है,
सच में, यह उत्कल जननी बड़ी पावन और महान है ।

ऊपजाऊ भूमि, खनिज संपदाओं का भंडार, चीलका और
हीराकुंड इसकी शान है,
सच में, यह उत्कल जननी बड़ी पावन और महान है ।

मो बस

श्री तपेश कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय: महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2)

(राजधानी क्षेत्र शहरी परिवहन (सीआरयूटी) प्राधिकरण द्वारा सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के साथ-साथ एक नागरिक केंद्रित बेहतरीन शहर परिवहन सेवा प्रदान करने का मिसाल)

मो बस ओडिशा के राजधानी क्षेत्र शहरी परिवहन (सीआरयूटी) प्राधिकरण की बस सेवा को संयुक्त राष्ट्र द्वारा जून 2022 में ''सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने हेतु लिंग-उत्तरदायी सार्वजनिक सेवा को बढ़ावा देने में भूमिका के लिए (for its role in promoting gender-responsive public service to achieve the Sustainable Development) वार्षिक लोक सेवा पुरस्कार 2022 से नवाजा गया है ।

वर्ष 2010 में भुवनेश्वर में अंत:शहर मार्गो तथा भुवनेश्वर, पुरी, कटक और खुर्दा के बीच अंतर्शहर मार्गो पर बस सेवाओं के प्रबंधन और संचालन के लिए भुवनेश्वर पुरी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज (BPTS) का स्थापना किया गया था । दिनांक 4 मई, 2018 को शहर में सार्वजनिक परिवहन सेवाओं को पुनर्गठित करने की दृष्टि से बीपीटीएस को राजधानी क्षेत्र शहरी परिवहन (सीआरयूटी) में विकसित किया गया । सीआरयूटी ने दिनांक 6 नवंबर, 2018 को ''स्मार्ट तकनीक, सेवा मापदंड और ग्राहक संतुष्टि के उपयोग के माध्यम से शहर और इसके भीतरी इलाकों में शहरी सार्वजनिक परिवहन परिदृश्य का पूर्ण परिवर्तन'' सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 'मो बस' (अर्थात मेरा बस) शीर्षक के तहत मो बस सेवा शुरु किया ।

मो बस 'लाइव ट्रैकिंग, ट्रैवल प्लानर और ई-टिकटिंग जैसी रीयल-टाइम तकनीकों' को शामिल किया है साथ ही अंतिम मील फीडर सेवा के रूप में कार्य करने हेतु 'मो ई-राइड' नामक एक ई-रिक्शा प्रणाली को भी लागू किया गया है ।

मो बस सेवाओं की योजना सभी प्रमुख खरीदारी, मनोरंजन और सांस्कृतिक केंद्रों के साथ साथ प्रमुख आवासीय क्षेत्रों की सेवा के लिए सभी सहायक पारगमन बुनियादी ढांचे में सुधार जैसे कि बस कतार आश्रयों, डिपो, टर्मिनलों आदि के साथ बनाई गई है ।

यात्रा में और यात्रा की योजना बनाने में सुविधा के लिए 'मो बस मोबाइल ऐप' भी लाँच किया गया है । यह ऐप यात्रियों को अपने यात्रा से और यात्रा की योजना से संबधित अद्यतन स्थिति की जानकारी प्रदान करता है । साथ ही, यह ऐप मो बस की लाइव ट्रैकिंग सुनिश्चित करता है, मार्ग की जानकारी प्रदान करता है, यात्रा की योजना के विकल्पों का सुझाव देता है तथा इलेक्ट्रॉनिक टिकट खरीदने का विकल्प भी देता है ।

सीआरयूटी मो बस की सवारी के लिए कैसलेश (नकदीहीन) भुगतान करने का एक अतिरिक्त सुविधा प्रदान करता है । सीआरयूटी बस नेटवर्क के अंतर्गत वैध तीन प्रकार के मो पास क्रमश: भुवनेश्वर पास मैजिक पास, और रु पास भी आरंभ किया गया है । ये पास केवल मो बस मोबाइल ऐप के जरिए ही खरीदे जा सकते है ।

यह सुनिश्चति करने के लिए कि मो बस नागरिकों के लिए वहनीय (affordable) हो, सीआरयूटी ने यात्रियों को पैसे बचाने में मदद करने के लिए तय की गई दूरी के अनुसार विभिन्न प्रकार के किराया लागू किया है । वातानुकूलित मो बस का किराया 5 रूपये से 70 रूपये

तक का है जबकि गैर-वातानुकूलित मो बस का किराया 5 रूपये से 55 रूपये तक है । ओडिसी कार्ड (Odyssey Card) और अन्य डिजिटल वॉलेटों द्वारा भुगतान करके खरीदने पर मूल किराए मे क्रमश: 20 और 10 की छूट भी दी जाती है ।

बसों को मुफ्त ऑन-बोर्ड वाई-फाई सेवा, डिजिटल घोषणाएं, निगरानी कैमरे और इलेक्ट्रॉनिक टिकटिंग जैसी स्मार्ट तकनीकों को एकीकृत करके डिजाइन किया गया है । साथ ही, सीआरयूटी का कहना है कि कार्यबल (workforce) में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और महिला यात्रियों को विशेष सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से वह यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि 50 मो बस गाइड (कंडक्टर) महिलाएं हो ।

मो बस और मो ई-राइड साथ मे मिलकर कुल 17 SDG में से 17 SDG को संबोधित करती है जो इस प्रकार है : SDG5: लौगिक समानता, SDG8: अच्छा कार्य और आर्थिक विकास, SDG10: असमानता में कमी, SDG11: सतत शहर और समुदाय और SDG13: जलवायु परिवर्तन ।

संयुक्त राष्ट्र लोक सेवा पुरस्कार 2022 के अलावा मो बस ने वर्ष 2018 में अपने शुरुआत से अब तक विभिन्न अन्य प्रमुख पुरस्कार भी जीते हैं जैसे :

1. स्मार्ट सॉल्यूशंस चैलेंज एंड इनकूसिव सिटीज पुरस्कार 2022

गतिशीलता और परिवहन विषय के तहत समाधान का कार्यान्वयन

शहरी मामलों के राष्ट्रीय संस्थान (एनआईयूए) और संयुक्त राष्ट्र - भारत, 2022

2. स्मार्ट सिटीज इंडिया पुरस्कार 2021

स्मार्ट (एसपीवी) विशेष प्रयोजन वाहन

स्मार्ट सिटीज इंडिया एक्सपो, 2021

3. 14वां शहरी मोबिलिटी इंडिया पुरस्कार

पिछले वर्ष के दौरान सर्वश्रेष्ठ शहरी परिवहन परियोजनाओं को लागू करने वाले राज्य

आवास और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, 2021

4. 13 वां शहरी मोबिलिटी इंडिया पुरस्कार

कोविड-19 के दौरान शहरी परिवहन में किए गए परिवहन में किए गए नवाचार

आवास और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, 2020

5. 12वां शहरी मोबिलिटी इंडिया पुरस्कार

बेस्ट सिटी बस सर्विस योजना

आवास और शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, 2019

वर्तमान में शहर के लगभग 57 प्रतिशत यात्री मो बस का इस्तेमाल कर रहे है इसके अतिरिक्त, यह अनुमानित है कि मो ई-राइड 30-50 प्रतिशत प्रदूषण में कमी के साथ एक ग्रीन, सतत परिवहन समाधान को बढ़ावा देगा । यह सरकार के साथ-साथ ओडिशा के लोगों के लिए भी गर्व की बात है कि उनकी पहल को वैश्विक मंच पर पहचान मिल रही है।

ओडिया नृत्य

: कार्यालय भवन :

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम)

ओडिशा, भुवनेश्वर

: कार्यालय भवन :

महालेखाकार (लेखापरीक्षा - द्वितीय)

ओडिशा, भुवनेश्वर

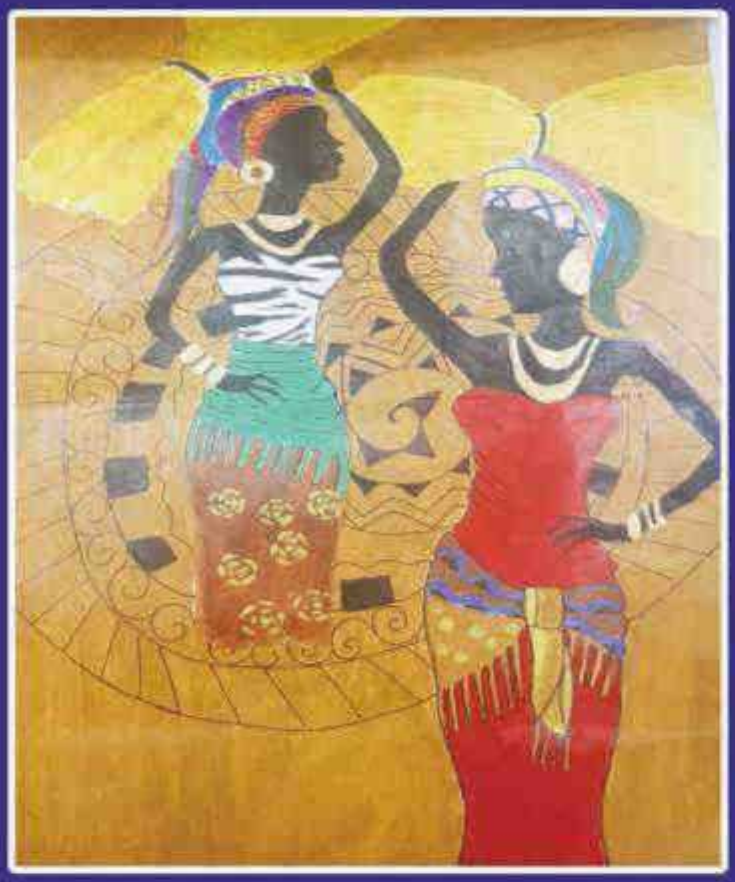

अदिती महान्ती
सुपुत्री - श्री सत्य नारायण महान्ती

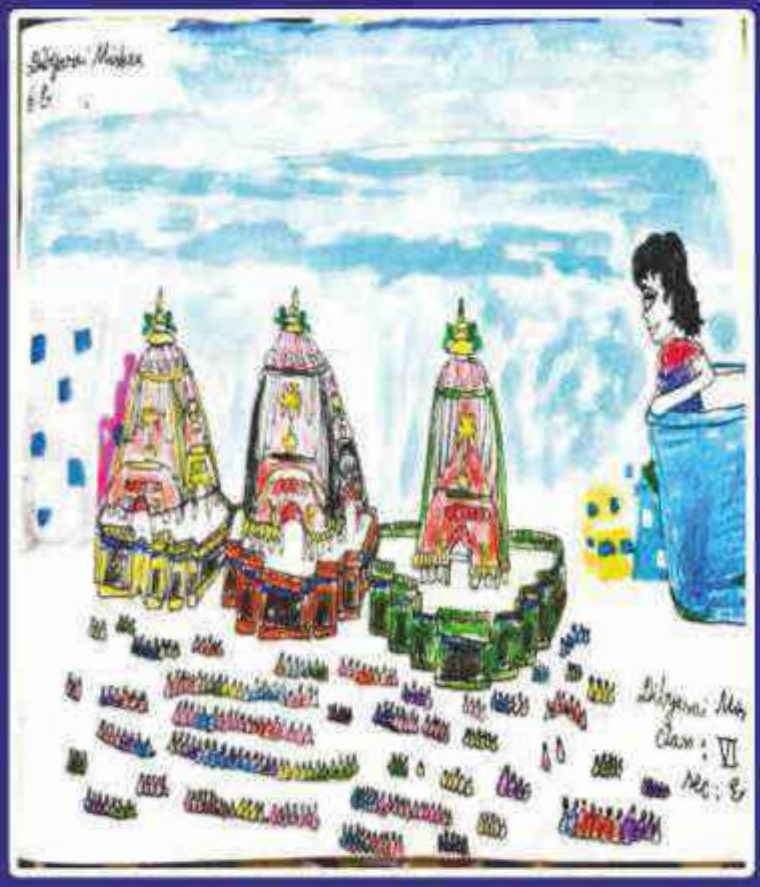

दिव्यसाईं मिश्र
सुपुत्री - श्री काली प्रसाद मिश्र

मुरलीधर पंडा
सुपुत्र - श्री गंगाधर पंडा

अदिती महान्ती
सुपुत्री - श्री सत्य नारायण महान्ती